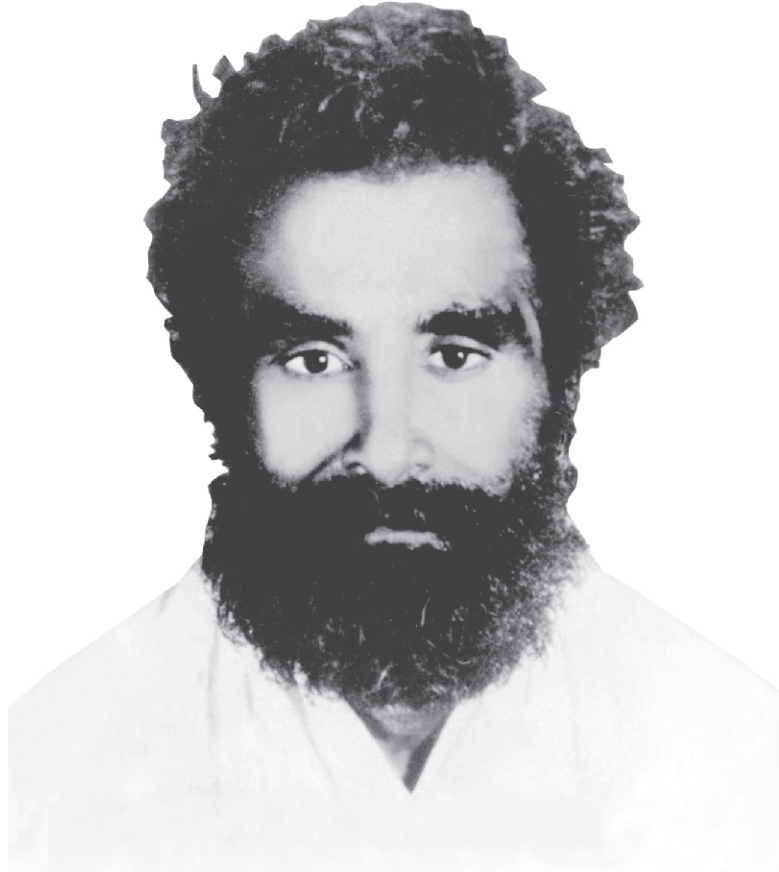


ऋग्वेद अहिंसा

परमोधर्मः यजुर्वेद

ओ३म्त त्सत्

# ब्रह्म रूप गुरु ब्रह्मानन्द जी



गुरु ब्रह्मानन्द जी के दिव्य चमत्कार

प्रस्तुति - गुरु ब्रह्मानन्द जी सेवा दल, चूहड़माजरा

सामवेद

अथर्ववेद

ओ३म्त त्सत्

जगद्गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी के निवारण दिवस पर  
वैशाख सुदि पूर्णमासी वि. सं. 2070-71

प्रकाशक :- गुरु ब्रह्मानन्द जी सेवा दल  
चूहड़माजरा (कैथल)

लेखक :- व संग्रहकर्ता :- विजय चूहड़माजरा  
प्रथम संस्करण - 2014  
मुद्रित प्रतियाँ - 1000

मूल्य :- गुरु प्रेम

पुस्तक मिलने का पता :-

जगद्गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जन्म भूमि  
मन्दिर ग्राम चूहड़माजरा (कैथल)

ॐ

ओ३म् तत्सत्

आरती विश्वपति श्री ब्रह्मानन्द जी

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

हाथ जोड़ विनती करें, पार करो खेवा ।

स्वामी पार करो खेवा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेशा, नारद, शारद संग गणेश । सन्त करें सेवा ।

स्वामी सन्त करें सेवा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

सूर्य, चन्द्रमा दे परिक्रमा इन्द्र कुबेर ध्यान धरें तेरा ।

स्वामी ध्यान धरें तेरा ।।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

राजा-प्रजा, नर-नारी, सब ध्यान करें तेरा ।

स्वामी ध्यान धरें तेरा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

ऋषि, मुनि, ब्रह्मचारी ध्यान धरें तेरा

स्वामी ध्यान धरें तेरा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

गंगा, यमुना, सरस्वती तेरे चरणों की चेली ।

स्वामी तेरे चरणों की चेली

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

ज्ञानियों को ज्ञान तुम, ध्यानियों को ध्यान तुम बलियों को बल देवा ।।

स्वामी बलियों को बलदेवा

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

चारों वेद छओं दर्शन तेरा गुण गावें,

स्वामी तेरी महिमा गावें

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

सात द्वीप, चौदह भवन, नौखण्ड,

तीन लोक में तेरी धूम मची गुरुदेवा ।

स्वामी तेरी धूम मची सत्यदेवा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

सब की इच्छा पूरी करो जो तेरे चरणों में आवे,

स्वामी जो तेरी महिमा गावे ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

हाथ जोड़ विनती करें, पार करो खेवा ।

स्वामी पार करो खेवा ।

ॐ जय गुरु ब्रह्मानन्द देवा, स्वामी जय, जय, जय गुरु सत्य देवा ।।

ओ३म् तत्सत्

सत्पुरुषों का - सत्कार हो

ओ३म् तत्सत्  
**जगद्गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी के जीवन**  
**की विशेष तिथियाँ**

- |   |  |
|---|--|
| 1) गुरु जी का अवतरण ।   | - पौह सुदि प्रतिपदा वि. सं.<br>1965 ( गुरुवार ) तदनुसार<br>24 दिसम्बर सन् 1908 |
| 2) गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रवेश ।   | - सन् 1920   |
| 3) सर्वप्रथम हरिद्वार में पदार्पण ।   | - सन् 1922   |
| 4) अंग्रेजों को भारत छोड़ने हेतु<br>40 दिन का व्रत ।                              | - वि. सं. 1990<br>- सन् 1933   |
| 5) पाण्डू पिण्डारा में प्रवेश ।   | - वि. सं. 1991<br>- सन् 1934   |
| 6) पूज्य स्वामी भीष्म जी घरौंड़ा<br>से विदाई आज्ञा ।                              | - सन् 1935   |
| 7) तीन देवियों ( विभूतियों ) द्वारा<br>पंचरंगे झण्डे की प्राप्ति ।                | - आसौज वदि दूज या<br>- तीज वि. सं. 1993<br>सन् 1936                            |
| 8) राजकीय चिकित्सालय, पूण्डरी में प्रवेश  | - सन् 1942   |
| 9) गुरुकुल ओ३म् पुरा का शुभारम्भ ।  | - सन् 1947   |
| 10) गुरुकुल ओ३म् पुरा का त्याग ।  | - सन् 1951   |
| 11) शूरीर ग्राम व तेरहा ग्राम ( मथुरा ) उ. प्र.<br>में प्रचार अवधि ।              | - सन् 1952-53  |
| 12) फतेहपुर-पूण्डरी आश्रम में अन्तिम<br>समय का उपदेश ।                            | - 24 अप्रैल सन् 1973   |
| 13) पूण्डरी आश्रम पुस्तकालय से साध्वी<br>दर्शना देवी द्वारा पवित्र वेद निकलवाना । | - 2 मई वै. अमावास्या<br>- सन् 1973   |

- |  |   |
|--|---|
| 14) गुरु जी का निर्वाण दिवस ।          | - 16 मई सन् 1973 तदनुसार<br>वैशाख सुद्धि बौद्ध पूर्णिमा दिन बुधवार रात्रि 8 बजे |
| 15) वन्दनीय माता जी का देहावसान ।      | - सन् 1917  |
| 16) परम आदरणीय पिता श्री का देहावसान । | - सन् 1919  |
- उपर्युक्त तिथियों की प्रामाणिकता का आधार
- क) शिलालेख ।  
ख) बही खाते ।  
ग) जनश्रुति ।  
घ) इश्तिहार ।  
च) श्रद्धालु भक्तों से सम्पर्क ।  
छ) स्वयं गुरु जी के मुखारबिन्द से श्रुत ।  
ज) 100 साले पञ्चाङ्ग से ।

ओ३म् तत्सत्

## भूमिका

ऐसी कोई कलम, ग्रंथ आज तक विश्व में नहीं बना। जो गुरु ब्रह्मानन्द जी जैसे भगवान रूप सन्त के जीवन चरित्र को कलम बद्ध कर सके। गुरु जी के जीवन में करोड़ों ऐसी दिव्य चमत्कारी घटनाएं घटित हुईं जिनको कलम बद्ध करना आकाश को नापना व सूर्य को दीपक दिखाना जैसा होगा। गुरु जी जहां भी जाते थे, वहीं पर कुछ ना कुछ ऐसा घटित हो जाता था, जिससे वहां के लोग स्वामी जी को दर-दर ढूंढते फिरते थे। ऐसी अनेकों चमत्कारी घटनाएं आपको सुनने में मिल जाएगी कि गुरु जी ने लाल मिर्चें डलवाकर आखों के रोगी की आंखों को ठीक किया। गुड़ की बेल्ली बांटने से निःसंतान माता को बच्चे का होना, रड़े (मिट्टी का टिल्ला) से धक्का देकर लकवे के मरीज का ठीक होना आदि ऐसी घटनाएं हैं जिसको अगर लिखने बैठ जाए तो मनुष्य का एक जीवन पर्याप्त नहीं होगा। मेरे मन में एक भाव काफी सालों से पनप रहा था कि मैं गुरु जी के कुछ चमत्कारों को संग्रह करूं, क्योंकि मेरा जीवन भी गुरु जी के एक दिव्य चमत्कार से प्रभावित रहा है। मेरी उम्र लगभग 12 साल रही होगी, मैं गुरु जी के आश्रम चूहड़माजरा जहां आज विशाल मन्दिर है, में रात के समय सो रहा था। मुझे स्वप्न आया जिसमें मुझे देवियां ढाण्ड चौक पर हवन करती हुई दिखाई दी। सुबह उठकर मैंने महात्मा जगदीशानन्द जी को बताया। महात्मा जी ने हंसकर मेरे स्वप्न की बात को टाल दिया। मैंने फिर महात्मा जी से मेरी पुरी बात सुनने का आग्रह किया तो महात्मा जी ने कहा कि बेटा आप आश्रम में सेवा करते हो और गुरु जी में श्रद्धा रखते हो इसलिए आपके स्वप्न में हवन ही आते हैं। फिर थोड़ा गम्भीर होकर कहा कि ढाण्ड चौक पर हमें कौन हवन करने देगा। उस गांव में वैसे भी रोड़ नहीं रहते। फिर भी महात्मा जी ने मेरा मन रखने के लिए या पूर्वाभास के कारण मेरे स्वप्न को टेप रिकार्डर में रिकॉर्ड कर लिया। लगभग 5 वर्ष बाद ढाण्ड चौक जगद् गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के नाम से हरियाणा सरकार ने मंजूर कर दिया। जिसमें ढाण्ड गांव के स्थानीय निवासियों का बहुत बड़ा योगदान था। इस चमत्कारी घटना के बारे में फिर महात्मा जी ने लोगों को बताया। मेरे जीवन में घटित इस घटना में ही इन दिव्य चमत्कारी घटनाओं को संग्रह करने के लिए मुझे प्रेरित किया।

ओ३म् तत्सत्

विजय कुमार

चूहड़माजरा

ओ३म् तत्सत्

## गुरु ब्रह्मानन्द जी के दिव्य चमत्कार

### (1) माता के गर्भ में प्रकाश का दीखना

स्वामी जी कभी-2 हमको अपनी बचपन की बातें सुनाते थे। वह माता जी के गर्भ में दिखाई देने वाले प्रकाश के बारे में भी बताया करते थे कि “मुझे गर्भ में प्रकाश दिखाई देता था। मालूम होता है कि स्वामी जी महाराज को ऋग्वेदोक्त वामदेव ऋषि के समान गर्भ में ही अपनी आत्मा और परमात्मा का पूरा-2 ज्ञान हो चुका था। उन्होंने बताया कि “मुझे अपनी माता के गर्भ में ही कहीं बाहर से प्रकाश आता हुआ दिखाई देता था। मैं उस प्रकाश की ओर पकड़ने के लिए भागता परन्तु वह प्रकाश लुप्त हो जाता था। मैं उसको पकड़ने के लिए इच्छुक होता। परन्तु मैं उसे पकड़ नहीं सकता था। यह पता नहीं यह प्रकाश किस साधन के द्वारा अन्दर आता था। मुझे प्रतीत होता था कि मुझे जबरन रोक रखा है।” फिर भी हम कल्पना कर सकते हैं कि ये आत्मवेत्ता ऋषि थे। इन्हें पूर्वले पुण्य संस्कारों वश ज्योति स्वरूप परब्रह्म का ही प्रकाश दिखाई देता था। गर्भ में रहते हुए ही उनको पूरा-पूरा ज्ञान हो चुका था। यह गर्भावस्था की घटना उन्होंने हमें कई बार सुनाई जोकि उन्हें पूर्ण रूपेण याद थी।

### (2) बचपन की बातों की प्रत्यभिज्ञा (स्मरण)

बड़े होकर स्वामी जी ने अपने मुखारबिन्द से बचपन की बातें सुनाई जो कि सभी को आश्चर्य में डालने वाली हैं वे कहते थे कि मैं जब छोटा 5-10 दिन का बच्चा था या 2-4 महीने का था तो वे सब बातें मुझे याद रहती थीं। मैं अपने माता-पिता, भाई-बहनों की सब बातें सुनता, समझता और अपनी भाषा में उतर भी देता था फिर जब मैं 5-6 वर्ष का था तो अपने बचपन की बातें (2-4 महीने की अवस्था की) सब बातें अपने माता-पिता को कभी-2 बताता भी था।

किसी समय इनकी माता अपने माता-पिता को मिलने के लिए

गई थी। उस समय इनकी आयु लगभग 4-5 महीने की थी। उस समय की सारे बातें इनको भली भाँति याद थी।

क्योंकि एक बार इनके परिवार में चर्चा हो रही थी अर्थात् इनकी माता जी अपने बालकों से कह रही थी कि मैंने तुमको तुम्हारे ननिहाल के घर की यात्रा करा दी है परन्तु यह एक लड़का जो छोटाराम है वही रह गया है। उस समय छोटाराम की आयु लगभग 6 या 7 वर्ष की थी। यह उसी समय बोल उठा कि माता जी यह आप क्या कह रही हैं कि मैं अपने ननिहाल के घर नहीं गया। मुझे भली प्रकार याद है कि मैं उस समय 5-6 महीने का था। आप मुझे अपने साथ ले गई थी। मुझे मेरी नानी ने गोद में रखा था। उसने मुझसे बहुत प्रेम किया था। आप को पीढ़े पर बैठाया था। खाने के लिए मीठा दिया था। मेरी नानी के घर के आगे एक नीम का वृक्ष खड़ा था। और आप अगले दिन प्रातः काल वापिस घर आ गई थी। इत्यादि-इत्यादि।

जब माता जी ने इस छोटे से बालक की इतनी बात सुनी तो उन्होंने भी पुरानी बात की याद आ गई। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगी कि मेरा पुत्र तो वास्तव में ही विलक्षण शक्ति सम्पन्न भगवान् का अवतार है।

### (3) श्री छोटा राम का चमत्कारी बचपन

महाराज जी स्वयं श्री मुख से बताते थे कि जमींदार होने के नाते से मेरे पिता जी गो-भैंस पाला करते थे वे मुझे पशु चराने के लिए भेज देते थे। परन्तु मेरी कोई विशेष रुचि नहीं होती थी कि मैं कभी पशु चराने जाता और कभी नहीं भी जाता था मेरे निषेध करने पर मेरे घर वाले मुझे पीटते थे वे मेरे स्वतन्त्र विचारों को देखकर आश्चर्य चकित होते थे मैं अपनी मर्जी से रहता था मुझे एकान्त में बाहर जंगलों में आंख मीचकर बैठने की आदत थी। ऐसा करने से मुझे विशेष आनन्द आता था। मैं अधिक ठाली रहना भी पसन्द करता था और सुखी बनना भी चाहता था।

यह मेरा स्वभाव था कि मुझको काम के लिए कोई न कहे मैं अपनी मर्जी से काम करूँ जब मैं काम करूँ तो मुझे हटाया न जावे और यदि न करूँ तो मुझे टोका न जावे यदि मेरे दिल में आ गई तो खूब मेहनत के साथ काम करता और यदि दिल ने नहीं चाहा तो एकदम छोड़कर चल देता जैसे मैं गऊओं को चरा रहा हूँ। यदि ध्यान में आ गया तो उनको वहीं छोड़कर चला गया किसी को यह भी नहीं कहता था कि मैं जा रहा हूँ।”

कभी-2 आपके पिता जी आपको गऊओं के छोटे बच्चे-बच्चियों को देकर खेतों में चराने के लिए भेज देते। आप उन्हें जंगल में सूने छोड़कर एकान्त स्थान में बैठ जाते और वे बच्चे जाकर अपनी-2 माताओं से मिलकर उनका सारा दूध पी जाते थे। कभी किसी के खेत में चले जाते थे खेत के मालिक उन पशुओं के बच्चों को बाहर निकाल कर आपके पिता जी के पास शिकायत करते थे। आपके पिताजी आपको प्यार से समझाते थे कि आगे से ऐसी भूल न करना क्योंकि पिता जी का आपसे विशेष प्रेम या मोह था।

कभी-2 आपके पिता जी आपको जबरदस्ती पशु चराने भेज देते थे। आप पशुओं को किसी के खेत में छोड़ देते थे वे पशु अपनी मर्जी से चरते थे। परन्तु कभी भी पशुओं ने किसी के खेत का नुकसान नहीं किया।

एक बार आप काफी गौएं खेतों में चरती हुई छोड़कर जंगल में ध्यान लगाने के लिए चले गये वे गौएं एक जमींदार चौ. दियोतिया के खेत में चली गई। 15-20 बीघे के खेत में गौएं ही गौएं दीखती थीं। उस खेत के मालिक को अपना उजड़ा हुआ खेत देखकर बड़ा दुःख हुआ। वह खेत का मालिक क्रोधावेश होकर आपके पिताजी के पास आया और आपकी शिकायत करने लगा कि छोटा राम की गौओं ने हमारा सारा खेत उजाड़ दिया है। आपके पिता जी ने आपसे पूछा कि छोटा राम यह क्या सच है। आपने उतर दिया कि यह झूठ बोल रहा है। हमारी गौओं ने इसके

खेत में कोई नुकसान नहीं किया हमारी गौएं किसी का खेत नहीं खा सकती। चलकर खेत देख लो। ग्राम की पंचायत ने खेत में जाकर देखा तो गौओं के पांच के चिन्ह तो जरूर थे या थोड़ा बहुत घास खाया मिला। परन्तु मक्की, ज्वार, बाजरे का एक पौधा भी खाया नहीं मिला। यहां तक कि खेत पहले से भी हरा-भरा मिला। लोग यह देखकर दंग रह गये। खेत वाला बड़ा लज्जित हुआ और छोटा राम के पांव में गिरकर क्षमा मांगने लगा और कहने लगा कि छोटा राम तू सचमुच भगवान् है। यह घटना देखकर आपके पिता जी भी बड़े हैरान हुए और मन में प्रसन्न होते हुए कहने लगे कि मेरा बेटा छोटाराम तो एक चमत्कारी महापुरुष है। इसके बाद आपके पिता जी ने आपको कभी पशु चराने नहीं भेजा।

#### **(4) चने का खेत देखकर बुखार हो जाना**

गुरु जी कृषक परिवार से थे। वे खेती-बाड़ी का काम करते थे। गुरु जी जब छोटे बच्चे थे तो कभी-कभी उन्हें भी उनके परिवार वाले खेतों में काम करने के लिए ले जाते थे। जब गुरु जी का मन करता तो पूरी मेहनत से काम करते और यदि उनके मन में एकान्त में बैठकर ध्यान लगाने का विचार आता तो साफ इन्कार कर देते थे। ये स्वतंत्र विचारों के महाराज थे।

एक दिन इनके चाचा जी इनको खेत में चने काटने के लिए ले गए। छोटा राम जी भी दरांती लेकर काटने लगे। थोड़ी देर में छोटा राम जी खड़े हुए और चाचा जी से पूछने लगे कि चाचा जी हमारा चनों का खेत कहाँ तक है। इनके चाचा जी ने खड़ा होकर बताया कि वह नीम का पेड़ खड़ा है। वहाँ तक ये सारा चनों का खेत हमारा है। गुरु जी की अद्भुत लीला को कौन जाने गुरु जी मन में सोचने लगे इतनी गर्मी में इस चने के खेत को कौन काटेगा ऐसा सोचकर चाचा से कह दिया कि चाचा जी मेरा तो जाड़े-ताप (बुखार) हो गया है। और मैं तो घर जाता हूँ। गुरु जी घर आ जाते हैं। बुखार से बीमार पड़े रहे पर दवाई आदि लेने से भी

कोई आराम नहीं आया। जब गधे चनों की बोरी लेकर घर आए तो गुरु जी ने, चाचा जी से पूछा कि गधों पर क्या लाये हो? चाचा जी ने कहा “चने लाया हूँ।” गुरु जी ने पूछा “सब चने आ गए अब और चने तो नहीं काटने।” चाचा जी ने कहा कि नहीं सब उठा लिए हैं। अब चनों का खेत काटना बाकि नहीं रहा। गुरु जी बोले “बस चाचा जी मेरा तो बुखार उतर गया। मेरा तो बुखार चनों के काटने की वजह से हुआ था। बड़ी विचित्र लीलाएँ हैं उनके जीवन की उन घटनाओं में क्या रहस्य है हम अल्प बुद्धि वाले क्या समझ सकें। गुरु जी अपनी आयु के बच्चों में बड़े हृष्ट-पुष्ट थे खेलने-कूदने, दौड़ने में सबसे आगे रहते थे। बाद में गुरु जी ने ‘कर्मवीर’ की बड़ी प्रशंसा गाई।

**कर्म से योगी बने महात्मा।**

**कर्म से राजा, रंग, फक्कीर!!**

**आराम करो आराम करो कह रही दुनिया सारी।**

**आराम कहाँ बिना काम किए हो रहे बड़े दुखहारी।।**

‘पचासा’

गुरु जी ने पचासे में आलसियों की बड़ी निन्दा की है :-

**मूसा और जरतुस्त, कर्म करने में रहना चाहिए चुस्त।**

**हिजड़ा कायर मूर्दा, प्यारे उसकी यहाँ निन्दा है।।** स्वामी जी ने अपने मुखारविन्द से यह भी कहा कि “मैं ठाली रहना चाहता था। घर वाले मुझे काम करने के लिए कहते थे। इस कारण से मैंने घर ही छोड़ दिया था। बाद में गुरु जी ने एक प्रवचन में कहा कि मनुष्य को कोई न कोई काम तो करना ही चाहिए। फिर हमने यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म समझकर करना शुरू कर दिया। अब हमें पूर्ण शान्ति है।”

परन्तु मैं समझता हूँ कि गुरु जी को दुनिया के कामों में जुड़ना ही नहीं था। क्योंकि उनका लक्ष्य तो और ही था। वे जन्मजात सिद्ध पुरुष थे। दूसरे वह साधारण आदमियों वाली बात अपने ऊपर ले लेते थे तथा



बाद में लोगों को समझाते थे कि मैं बड़ा आदमी बनना और ठाली रहना पसंद करता था।

### **(5) पताशे मुट्ठी भर कर दो।**

चौ० अनन्त राम सुपुत्र श्री नन्हाराम ने एक अद्भुत चमत्कार पूर्ण घटना सुनाई जिसे सुनकर योगी महापुरुषों के प्रति श्रद्धा बढ़ती है। योगी महापुरुषों के वे चमत्कार होते हैं जिसे साधारण आदमी स्वीकार नहीं करता परन्तु जिसने स्वयं प्रत्यक्ष चमत्कार देखे हों वह इन्कार नहीं कर सकता। उसकी आत्मा, वाणी और मन में ओज, जोश और भक्ति रस का तेज कुछ और ही होता है। जिसे वे अपनी अमोघ वाणी से उसकी चर्चा करता रहता है। चाहे दुनिया कुछ भी कहे पर वह अपनी मस्ती में गुरु महिमा का रात-दिन चिन्तन मनन करता है। उसके साथ ही प्रचार प्रसार फैलाता है। घटना इस प्रकार से है -

गाँव चूहड़माजरा में गुरु जी को बचपन से ही भगवान मानते थे। उनके माता-पिता की भी शूरवीरता, सज्जनता, धर्मात्मा होने का भी पूरा प्रभाव था। इसलिए जब भी गुरु जी गाँव में आते तो लोग हर एक आदमी अपनी श्रद्धा से रुपया पैसा गुरु जी के चरणों में चढ़ावा देते थे। अर्पण कर देते थे। गुरु जी त्यागी योगी पुरुष थे वे दान दी हुई राशि से पतासे मंगवा लेते और बच्चों में प्रसाद बंटवा देते थे। एक दिन गुरु जी ने मुझे पताशे बांटने के लिए कहा बच्चे मेरे पीछे-2 लग रहे थे मैं बच्चों को दो-2 पताशे दे रहा था। गुरु जी कहने लगे तू बच्चों को प्रसाद दो वह कहने लगा गुरु जी पतासे थोड़े हैं तथा बच्चे ज्यादा हैं। इसलिए थोड़े-2 दे रहा हूँ ये लेकर दुबारा फिर आ जाते हैं। गुरु जी ने उसकी झोली में से मुट्ठी भर कर कहा कि तू मुट्ठी भर-भर कर बाँटो पताशे खत्म नहीं होंगे। मैं मुट्ठी भर-2 कर बाँट। पतासे खत्म नहीं हुए। झोली ज्यों की त्यों भरी रही। मैं यह देखकर घबरा गया कि यह ब्रह्मचारी के पतासे तो खत्म ही नहीं हो रहे। ब्रह्मचारी ने मेरी झोली में हाथ मारा तो कहा कि ये दो ही तो

पताशे बचे हैं यह तेरे लिए प्रसाद है। गुरु जी यह भी कहा था कि जब पताशे खत्म हो जाएंगे तो यह तेरे पीछे क्यों फिरेंगे तू खूला बांट।

### **(6) चमत्कारपूर्ण लीलाएं**

श्री गुरु महाराज जी के बचपन की बड़ी आश्चर्यजनक लीलाएं हैं। लोगों ने जन्म से ही इनको श्री कृष्ण भगवान का रूप माना था। इन्होंने पग-पग पर अनेक विचित्र लीलाएं दिखाई इनके बचपन की कहानियों को सुनते हुए मेरे कान थककर भी नहीं थकते तथा आँखें पढ़ना ही चाहती रहती हैं। यह है इनके विचित्र जीवन लीलाओं का विचित्रता।

1. जैसे हम पहले बता आये हैं कि पूज्य गुरु महाराज जी नंगे पाँव रहते थे और एक जमींदार घराने में पैदा हुए थे। उनके यहाँ खेती-बाड़ी करने के लिए एंव दूध देने वाले पशु होते थे। उस समय पशुओं के चारे का बड़ा अभाव था। लोग प्रायः कीकर, खजूर एवं झाड़ काट कर पशुओं को खिलाते थे। कभी-कभी स्वामी जी प्रायः अपनी इच्छा से झाड़ काटने के लिए जंगलों में चले जाते थे। स्वामी जी नंगे पाँव ही झाड़ काटते थे। झाड़ काटकर नंगे पाँव से ही उनके सूसले बनाते अर्थात् उन्हें इकट्ठा करते थे। परन्तु कभी भी स्वामी जी के पाँव में कांटे नहीं लगते थे। दूसरा स्वामी जी सूखे झाड़ काट कर लाते तो वह भी हरा-भरा हो जाता था। तीसरा यह था कि ब्रह्मचारी जी कितना भारी झाड़ों का बोझा सिर पर लाते तो वह ब्रह्मचारी जी के सिर से ऊँचा ही रहता था। यह घटना हमें उस समय के वद्वजनों ने बताई जिन्होंने यह घटना स्वामी जी के जीवन में अनेक बार देखने में आई। विचारिये की यह घटना कोई साधारण घटना नहीं थी अपितु असाधारण घटना थी जो योगी महात्मा के बिना यह घटना और किसके जीवन में घटित हो सकती है।

2. एक बार गाँव चूहड़माजरे वाले चौ. मामराज ने स्वामी जी के जीवन के विषय में एक चमत्कार पूर्ण घटना सुनाई। एक बार ये 8-10 वर्ष में हमारे गाँव आ गए। वहाँ एक आदमी ने व्यङ्ग के रूप में इनसे

कहा कि कोई लंगोटी बांध लेता है और कहता है कि मैं भी ब्रह्मचारी बन गया कोई लाल-पीले कपड़े पहन कर कह देता है कि मैं भी सिद्ध बन गया। कई दिनों तक वह ऐसा ही कहता रहा।

एक दिन ब्रह्मचारी जी बैठे सत्संग कर रहे थे। उनके आस-पास पचासों आदमी बैठे सत्संग सुन रहे थे। उस आदमी ने फिर वही बात कह दी। ये आसन लगाकर बैठ गए। एक तीन-चार गज लम्बा चौड़ा सफेद चादरा मंगवाया। इनके कहने पर चार मनुष्यों ने चादरे के चारों पल्ले पकड़कर इनके सिर पर रख दिया और वे इस चादरे को नीचा करवाते रहे। चादरा बिल्कुल नीचे जमीन में लग गया, देखा तो केवल इनकी कौपीन और धोती ही वहाँ पड़ी हुई दिखाई दी, ब्रह्मचारी जी वहाँ पर नहीं थे। यह बड़ी आश्चर्य की बात थी। सब लोग 2-3 घंटे वहाँ आश्चर्य चकित हुए बैठे रहे। अन्त में निराश होकर चिल्लाने लगे कि गुरु महाराज जी आओ आप कहाँ चले गए। हम आपके बिना रोटी-पानी कुछ भी नहीं खायेंगे आओ सिद्ध जी महाराज हमें दर्शन दो। हम सब यहीं अनशन करके मर जायेंगे। सब उस कहने वाले आदमी को धिक्कारने लगे। वह आदमी भी बड़ा लज्जित और भयभीत हुआ।

पास ही एक ईख का खेत था। इन्होंने ओउम बोल कर कहा कि मैं नंगा हूँ, मेरी धोती और कौपीन लाओ जब मैं आऊँगा। 5-6 फुट ऊँची काँटो की भाड़ थी। लोगों की बेचैनी एक दम दूर हो गई। सबके दिलों में जान और मुख पर प्रसन्नता छा गई। लोगों ने अन्दर खेत में कौपी फेंक दी। ये कौपीन बाँध कर काँटो वाली भाड़ के ऊपर से आ गए। कुछ लोगों ने सोचा इनके पाँव में काँटे लगे होंगे। देखने पर एक भी काँटा नहीं मिला। इससे लोग और भी अचम्भे में पड़ गए। कहने लगे कि हमें गुरु जी को जाते समय नहीं देखा। गुरु जी वहाँ कैसे पहुँच गए। ये चमत्कार देखकर व्यङ्ग करने वाले आदमी ने हाथ जोड़कर क्षमा माँगी और सबने श्री छोटा राम ब्रह्मचारी जी के जय के नारे लगाए।

3. चौ. मामराज ने एक दूसरी चमत्कार पूर्ण घटना और सुनाई कि हमारे ग्राम का तालाब जेठ के महीने में सुखा पड़ा था। कुँए के बिना पानी कहीं नहीं मिलता था। ब्रह्मचारी जी मुझसे कहने लगे कि आओ तालाब में स्नान करके आवेंगे। मैं बोला वहाँ पर पानी की एक बूंद भी नहीं। ब्रह्मचारी जी मुझे ले गए। तालाब के बीच में चले गए वहाँ उन्होंने एक मिट्टी का ढला तालाब में से उखाड़ दिया। एकदम गंगा बह निकली। ब्रह्मचारी जी ने कहा कि स्नान कर लो यह संकल्प गंगा है। बस फिर क्या था, तालाब पूरा पानी से भर गया। लोग गुरु जी की संकल्प गंगा में गोते लगा कर अपने आपको धन्य मानने लगे। आस-पास के लोगों का मेला लगने लगा। जब तक गुरु महाराज जी जीते रहे तब तक उस तालाब का पानी नहीं सुखा। गुरु जी के ब्रह्मलीन होते ही तालाब सुख गया। यह उनकी ही लीला थी और किसकी कही जाए लोगों ने ब्रह्मचारी जी का बड़ा धन्यवाद मनाया।

4. गुरु जी महाराज के बड़े भाई चौ. फूल सिंह कहते थे कि हम एक बार 8-10 आदमी बैठे थे। उनमें गुरु जी भी थे। मैंने कह दिया कि ब्रह्मचारी जी कोई सिद्धि का चमत्कार दिखाओ। ब्रह्मचारी जी ने एक कुण्डली बनाई। उसमें ब्रह्मचारी जी स्वयं बैठ गए। ब्रह्मचारी जी ने अपने हाथ पर एक सरसों का हरा-भरा, फूल पतियों सहित पौधा 2-3 फुट का दिखा दिया। फिर धीरे-धीरे वह पौधा छोटा होता हुआ गायब हो गया। यह देखकर सभी को आश्चर्य हुआ सबने ब्रह्मचारी जी को नमस्कार किया। यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि “चमत्कार को ही नमस्कार होता है।”

### (7) शारीरिक - बल - प्रदर्शन

गुरु जी महाराज ने ब्रह्मचर्यावस्था में राममूर्ति की तरह अनेक प्रकार के बल प्रदर्शन भी दिखाये। गुरु जी उस समय दण्ड, बैठक लगाते और दौड़ एवं आसन भी करते थे। जिससे शरीर बलवान हो गया था।



गुरु जी अखाड़े में गोड़ों व कोहनियों के बल खड़े हो जाते। ऊपर से बड़े-2 पहलवान कूदते परन्तु गुरु जी टस से मस नहीं होते। आखाड़े में लेट जाते 5-7 पहलवान एक साथ लगकर भी कमर नहीं लगा सकते थे। ये अपने दोनों भुजाओं को सीधा कर लेते और पहलवानों को कहते कि इस पर मूसलों की चोट मार कर भुजा को नीचे करो। परन्तु वह टस से मस नहीं कर सकते थे।

पूरी बोझ से भरी हुई बैल गाड़ी को छाती से उतरवाते सरिया मोड़ना, छाती पर घन रखकर नई फाली में डंग निकलवा देना, दो-दो कारों को एक साथ रोक देना, उलटे लेटकर तीर चलाना, निशाना बाँधना आदि बल प्रदर्शन दिखाते थे। एक पांव पर सारे शरीर का बल दे देते और फिर कहते कि इसको उठाओ। किसी से नहीं उठता था। रस्सा पकड़ कर खींचते एक और सब पहलवान लगते परन्तु गुरु जी तिल भर भी नहीं हिलते थे। गुरु जी नवयुवकों में ब्रह्मचर्य का जोश भरते थे कभी प्रदर्शन में एक पैसा भी नहीं लिया। केवल ब्रह्मचर्य की महिमा ही दिखलाते थे।

युवावस्था में गुरु जी पूरे जवान थे। बड़ी चौड़ी छाती थी। साढ़े छः फुट का ऊँचा लम्बा कद था, चौड़ा तेजस्वी माथा था। बहुत मोटी-2 रानें थी। गुरु जी के हाथ की उँगलियाँ भी लम्बी थी। उस समय खड़ाऊँ पहन कर चलते थे गली में जब चलते थे तो खड़ाऊँ की आवाज दूर-2 तक सुनाई देती थी और पांव के नीचे जमीन दलकती थी जैसे रेलगाड़ी के चलने के समय पटड़ी दलकती हो।

गुरु जी हरिद्वार में रहते हुए हरिद्वार से ऋषिकेश तक की दौड़ लगाते थे। रास्ते में कहीं नहीं रूकते थे। इसी प्रकार ऋषिकेश से हरिद्वार आते समय बीच में कहीं नहीं रूकते थे। एक बार पिण्डारे से 5 मन अनाज लेकर जीन्द आटा पिसवाने के लिए ले गये और वहाँ से पिसवा कर वापिस पिण्डारे ले आये। रास्ते में कहीं नहीं उतारा। और न बोझ ही अनुभव हुआ। बड़ी-2 कीकरी को जड़ से उखाड़ फेंक देते थे।

सच है ब्रह्मचर्य की महिमा अपार है। जैसा शास्त्रों में कहा है।

यह शास्त्रोक्त वाक्य स्वामी जी में पूर्णतया घटते थे।

इस प्रकार गुरु जी ने अपने प्रारम्भिक समय में बल प्रदर्शन करके यह प्रमाणित कर दिया कि संसार में वास्तविक शक्ति तन की है धन की नहीं और तन की शक्ति का प्रधान कारण है ब्रह्मचर्य रक्षा एवं उसका पालन।

### (8) लोहे की बेल ठंडी होना

चौ० नसीब सिंह सुपुत्र चौ० तेलू राम चूहड़माजरा ने गुरु महिमा की काफी बातें बताई उन्होंने कहा कि गुरु जी कभी-कभी मोटे लोहे की बेल को गर्म करवा लेते। लुहार की भट्ठी में बिल्कुल धौंकनी के साथ हवा देकर पूरी लाल गर्म करवा लेते थे, जेठ की भीषण गर्मी की दोपहरी में। दो आदमी उस बेल को दोनों और से तुरंत चंडासी से पकड़ लेते थे। गुरु जी दोनों हाथों की मुट्ठी में सांकल (बेल) को पकड़ लेते थे लम्बी गर्म लोहे की बेल को आराम से हाथ से बंद मुट्ठी से एक सिरे से दूसरे सिरे तक खींच लेते थे। पर गुरु जी के हाथों को कुछ भी पता नहीं होता था। बड़े अचम्भे की बात यह होती थी कि वह लाल लोहे की गर्म सांकल हाथ में मुट्ठी को खींचने से सांकल ही बिल्कुल ठंडी हो जाती थी। जबकि उस गर्म सांकल को दो घंटे भी छाया में डालें तो ठंडी नहीं हो सकती। यह चमत्कार हमने एक बार नहीं बल्कि कई बार देखा। इस दृश्य को देखने के लिए स्त्री व पुरुष, बाल-बच्चे सैंकड़ों की संख्या में इकट्ठे हो जाते थे। यह कोई साधारण घटना नहीं थी कि गर्म लोहे की सांकल को मुट्ठी में बंद करके खींचना फिर वह सांकल ठंडी हो जाना जबकि गुरुजी के हाथों में कोई वस्तु लगी नहीं होती थी ये तो अद्भुत दिव्य चमत्कार था।

### (9) गुरु जी की दूर दृष्टि (पताशे वाली घटना)

एक दूसरी घटना और पताशों के बारे में सुनिए जिस घटना से यह मालुम होता है कि योगी पुरुष दूर बैठे ही सब बातें जान जाते हैं।

एक दिन गुरु जी बाहर से आए और पानी की खाल पर बैठ गए। रात का समय था लोग बोले यह भोला सा आदमी कौन बैठा है। इसको ढला मारो। चौ. भाग सिंह सुपुत्र चौ. हरनाम उन्हें देखने चला गया। उन्होंने देखा कि वह छोटाराम ब्रह्मचारी हैं। गुरु जी को ओउम् तत्सत् नमस्कार किया। फिर गुरु जी को अपनी बैठक में ले आये। गुरु जी के चरणों में लोगों ने पैसे चढ़ाने शुरू किए। गुरु जी ने उन पैसों के पताशे मंगाने के लिए चौ. भाग सिंह से कहा। उसने आगे से एक आदमी को पताशे लेने के लिए भेज दिया। थोड़ी देर बाद गुरु जी ने पूछा कि वह आदमी पताशे लेकर नहीं आया। भाग सिंह बोले कि मैंने पताशे लेने के लिए अमुक आदमी भेज रखा है। गुरु जी ने कहा भले आदमियों एक आदमी को और भेजो वह आदमी तो पताशे लुको (छूपा) रहा है। गुरु जी का भेजा हुआ दूसरा आदमी जब उसके पास गया तो देखा कि वह गली में खड़ा पताशे अपनी जेब में डाल रहा है। भेजे आदमी ने कहा कि तू यहाँ क्या कर रहा है? गुरु जी ने मेरे को भेजा है कि वह पताशे छुपाएगा और तु सच में ही लुको रहा है। उसने पूछा – “गुरु जी ने यह बात कही थी कि वह पताशे छुपायेगा। उसने तुरंत अपनी जेब से पताशे निकाल कर उस लिफाफे में डाल दिए और कहा भाई तू ले जा मैं गुरु जी के सामने नहीं जाता। मुझे डर लगता है। उस आदमी ने आकर सारी बातें गुरु जी को बता दी। वहाँ पर बैठे सभी लोग गुरु जी से पूछने लगे गुरु जी आपको कैसे पता चला कि वह पताशे छुपाएगा। पर गुरु जी तो जानी जान थे।

गाँव चूहड़माजरा में ही एक और घटना गुरु जी के बारे में पताशों से जुड़ी हुई है जोकि आज भी चर्चा का विषय है। एक बार गुरु जी गाँव चूहड़माजरा में गए। लगभग सभी 36 जात-बिरादरी की बैठकों,

चौपाड़ों में घूमते रहे। जब लोग गुरु जी को पैसा देते तो गुरु जी पताशे मँगवा कर बच्चों में बाँट देते थे। उस दिन सभी दुकानों के पताशे खत्म हो गये पताशे लाने वाला वापिस आकर पैसे गुरु जी को देने लगा। कुछ लोग बोले अमुक दुकानदार के पास होंगे उससे ले आओ। गुरु जी बोले वह तो पीपा लेकर कौल ग्राम की ओर जा रहा है। कुछ लोग देखने गये तो सचमुच वह पीपा उठाये कौल गाँव की ओर जाते हुए मिला। गुरु जी ज्ञानी थे उन्हें दूर तक दिखाई पड़ता था।

### (10) एक समय में अनेक जगह दिखना :-

गुरु जी बचपन से ही लोकप्रिय थे। छोटे से बच्चे थे जब से उनका लोगों से बड़ा प्यार था। वे उनके अनेक दिव्य चमत्कार देखकर प्रभावित थे। क्योंकि गुरु जी बाल योगी थे। योगदर्शन के विभूति पाद में आता है कि “मौयादिषु बलानि ..... 23 यो.वि.पा. मैत्री आदि में संयम करने से मैत्री आदि बल प्राप्त होता है जब मैत्री में संयम करता है तो सब प्राणियों का सुखकारी मित्र बन जाता है। गुरु जी बाहर घूम फिर कर जब गाँव में आते तो इनके घर के आगे एक नीम का वृक्ष होता था। उसके नीचे लोग प्रायः बैठे रहते हुक्का पीते रहते थे। आपस में लोगों में प्रेमभाव होता था तो एक दिन गुरु जी वहाँ आ गए। वहाँ पर काफी लोग बैठे थे। छोटाराम ब्रह्मचारी को देखकर लोग प्रायः इकट्ठे हो जाते थे। ताकि कुछ ज्ञान की बातें सुने तो वहाँ प्रसंग चल पड़ा ब्रह्मचारी छोटा राम जी आपका दुनिया में रुक्का पड़ रहा है कि गाँव चूहड़माजरा में एक सिद्ध बाल योगी ब्रह्मचारी भेष में रहता है। उसके ज्ञान-ध्यान, बल, शक्ति और दिव्य चमत्कारों की कोई सीमा नहीं। सभी वृद्ध व नौजवान भाई ब्रह्मचारी छोटाराम को बोले कि ब्रह्मचारी हमें कोई चमत्कार दिखाओ। ब्रह्मचारी ने कहा कि मैं कुछ नहीं जानता। ॐ-2 भगवान् का नाम जपता हूँ। आप भी जपा करो। इससे ही मनुष्य को शान्ति मिलती है। वहाँ पर बड़े चौधरी दियोतीराम बैठे थे। कुछ लोगों ने कहा कि भाई दियोतिराम कुछ ने कहा

चाचा, ताऊ दियोती राम आज गुरु जी से हमें चमत्कार दिखाओ। छोटा राम ब्रह्मचारी इस वाद-विवाद व उनकी जिद्द से परेशान होकर वहाँ से उठ कर जाने लगे। इतने में चौ. दियोति राम ने बिना विचारे ही गुरु जी की धोती पकड़ ली। इस भाव से कि गुरु जी बैठ जायें और आज हमें कोई चमत्कार दिखावें। चौधरी दियोति राम का गुरु जी के प्रति बड़ा श्रद्धा भाव भी था। परन्तु होता क्या है कि उनके हाथों में केवल धोती रह गई। यह नहीं पता लगा कि ब्रह्मचारी किस ओर गए। वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गए। चौ. नसीब सिंह छोटे बच्चे थे वहीं बैठे थे। यह घटना इन्होंने प्रत्यक्ष देखी। और चौ. अनन्त राम ने यह घटना चौ. लबेला से सुनी। चौ. सिंघराम सुपुत्र चौ. मनसा राम के मुखारविन्द से भी सुनी जिन्होंने अपनी आखों से इस घटना का साक्षात्कार किया था।

बूढ़े लोग चौ. दियोती राम पर गुस्सा हो गए कि तूने ब्रह्मचारी की धोती नहीं पकड़नी थी वे तो सिद्धमहात्मा हैं। चौ. दियोती राम बोले मैंने बिठाने के लिए धोती पकड़ी थी। मुझे यह थोड़े पता था कि यह घटना भी घट जाएगी। उपरोक्त भक्तों ने इस घटना को सत्य कहा क्योंकि ये भक्त सत्यवादी थे सज्जन आदमी थे। ब्रह्मचारी जी के चले जाने पर गाँव में यह चर्चा चली कि मुझे तो ब्रह्मचारी, चौपाड़ के आगे मिला था कोई कहता था कि अभी-अभी हमारी बैठक में से उठकर गया कोई कहता मैंने कौल सड़क पर देखा, कोई बोला तू झूठ बोल रहा है ब्रह्मचारी तो ढाण्ड की ओर सड़क पर जा रहा था। कहने का अभिप्राय यह है कि 1 घंटे तक गाँव के चारों ओर दर्शन देते रहे। परन्तु उस टोली को नहीं मिले जहाँ पर गुरु जी की धोती पकड़ी थी। बाद में चर्चा चली कि गुरु जी तो उस समय के अन्दर गाँव के चारों ओर लोगों को मिलते रहे। सभी लोगों ने गुरु जी को पुकारा कि गुरु जी आ जाओ नहीं तो हम यहीं भूखे बैठे रहेंगे। फिर गुरु जी 1 घंटे के बाद आकर उनके बीच में खड़े हो गए। सबने छोटाराम ब्रह्मचारी के चरण पकड़े सबके दिलों में जान सी आ गई। सभी के चेहरे

पर खुशी की लहर दौड़ गई। वृद्धों ने पूछा गुरु जी आप हमें जाते हुए दिखाई भी नहीं दिये। हमने आपको ईख में ढूँढा आप वहाँ भी नहीं मिले। क्योंकि पास में ईख का खेत था। गुरु जी ने कहा कि जिस जूड़े (गन्नों का गट्टा) को तुमने लाठी की खोद मारी थी मैं उसके पीछे ही तो छूपा बैठा था। जबकि उन्होंने बहुत ध्यान से उस पूरे ईख को देख लिया था। चमत्कार को नमस्कार होता है सारा गाँव इस घटना से प्रभावित हुआ और वृद्ध लोग यह कहने लगे कि भाई चौ. बदामा राम का तो यूँ छोटा भगवान का रूप है। कोई साधारण महात्मा नहीं है।

### (11) याद करते ही गुरु जी पहुँचे

एक बार की घटना है कि गुरु जी के बड़े भाई चौ. फूल सिंह की गाय दिन के 10-11 बजे ब्याई। उसने बछड़ा दिया। गाय ने सारा दिन बछड़े को चूंगने नहीं दिया। गाय दूध के जोर में तंग हो रही थी। रात्रि में गुरु जी के घर 5-10 व्यक्ति बैठे थे। चौ. फूल सिंह बोला गाय बच्चा नहीं लगा रही है। यदि कहीं से ब्रह्मचारी आ जाता तो यह गाय बच्चा लगा लेती। नसीब सिंह ने बताया कि मैं भी उनके बीच में बैठा था। लोग बोले भाई फूल सिंह ब्रह्मचारी जी अब रात में कहाँ से आवेंगे। सब लोग बैठे हुए हुक्का पीते हुए बातें करते रहे कि बच्चा खुला छोड़ दो। दूसरे पशु इसे मारते हैं। यह बछड़ा भी बेचारा भूखा मर रहा है। हमें पाप लगेगा। सब लोग उठकर चलने को तैयार ही थे कि ब्रह्मचारी जी की खड़ाऊँ दूर से बजती सुनाई पड़ी। उस समय गुरु जी खूंटियों वाली खड़ाऊँ पहनते थे। गुरु जी वहाँ पहुँच गए और फूल सिंह से बोले कि भाई अब कैसे याद किया? लोगों ने गुरु जी के आने का ही बड़ा अचम्भा लगा कि आध घंटे में ही गुरु जी वहाँ पहुँच गये। गुरु जी ने कहा कि मैं अब पिपली से आया हूँ। उसने गाय वाली कहानी सुनाई ब्रह्मचारी ने कहा, “गाय खोल दो आप घूम फिर कर लगा लेगी”, बात कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति ने फूल सिंह की ओर इशारा किया कि गाय की ओर देखो। बड़ी अद्भुत

घटना हुई कि गाय जो बछड़े को नजदीक नहीं लगाने दे रही थी अब बछड़े को प्यार से चाट रही थी। और बछड़ा दूध पी रहा था। इतने में चौ. फूल सिंह ने लोटा लेकर दूध निकाल लिया और गुरु जी को नमस्कार किया कि गुरु जी आपने बड़ी दया करी गाय का बच्चा भूखा मर रहा था। गाय भी बहुत तंग हो रही थी। हम बड़े दुखी थे। गुरु जी अंदर बैठे 15-20 मिनट बात करते रहे फिर उठकर चलने लगे। कमरे के दरवाजे में से तो निकलते दिखे पर आगे देखते ही देखते अन्तर्ध्यान हो गये। योग दर्शन में ठीक ही कहा है :-

**कायरुपसंयमात् तद् ग्राह्य शक्तिस्तम्भे चक्षुः प्रकाशा सम्प्रयोगेऽन्तर्धानम्!!**

अन्वयार्थ:- अपने शरीर के रूप में संयम करने के रूप की ग्राह्य शक्ति रूक जाती है इससे दूसरे के आँखों के प्रकाश से योगी के शरीर का सनिकर्ष न होने का कारण योगी के शरीर का अन्तर्ध्यान (छिप जाता) हो जाता है।

### (12) गुरु जी की ग्राम चोरकारसे में बाल-लीलाएं

कुछ दिन यहां ठहरकर वे फिर ग्राम चोरकारसा (जिला करनाल) में चले जाते हैं। यहां का महात्मा ब्रह्मलीन (दिवंगत) हो गया था। अतः डेरा सूना पड़ा था। गांव के लोगों ने बड़ा आग्रह किया कि महाराज जी हम आपको यहाँ का महन्त बना देंगे। परन्तु वे तो त्यागी पुरुष थे। उनको डेरे मन्दिरों की क्या कमी थी। कुछ दिन के बाद वे बंशीगिरी महात्मा को ले आए और उसे यहां का महन्त बना दिया।

यहां इन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया। वे यहां एक टेढ़ी जाल (वृक्ष) के नीचे धूना लगाकर बैठे रहते वैसे इन्होंने कभी धूना नहीं तापा। यह तो केवल स्वतन्त्र रूप से बैठने का स्थान बना लिया था। ये बच्चे बूढ़े सभी को गायत्री मन्त्र सिखाते और ॐ नाम का कीर्तन कराते। यहां बच्चों के साथ अनेक प्रकार की योग लीलाएं भी वे करते थे

जैसे छोटे-बड़े सभी को पहले तो अपने हाथ-पैर पकड़वा देते और फिर उनके पकड़े-पकड़े ही वहां से लुप्त हो जाते थे। उनके हाथों में कुछ भी नहीं रहता था। वे अचम्भे से एक दूसरे के मुँह की ओर देखते रह जाते।

वे उन दिनों बांसुरी भी रखते थे और बड़े मधुर स्वर से बजाते जिससे सब मंत्र मुग्ध हो जाते थे। ऐसा लगता जैसे द्वापर वाले श्याम फिर से आ गये हों। जब इनकी बांसुरी की आवाज लड़के या आदमी सुनते तो वे दौड़कर वहाँ पहुँच जाते। वे फिर वहाँ से देखते ही देखते लुप्त हो जाते। फिर किसी वृक्ष पर चढ़कर बांसुरी बजा देते। बच्चे दौड़कर फिर वहाँ जाते और कहते कि महाराज जी हमने आपको ढूँढ लिया है आज भी यह बड़ वृक्ष खड़े हैं जिन पर गुरु महाराज जी लीला करते थे किन्तु यह सकहते कि यदि आपने मुझे ढूँढ लिया है तो मुझे हाथ लगाओ।” फिर ये अदृश्य होकर किसी दूसरे वृक्ष पर बांसुरी बजा देते। लेकिन वहाँ जाते हुए किसी को नजर नहीं आते थे। अन्त में बच्चे हार मान जाते कि “गुरु जी महाराज आप हमें नहीं मिलते आप स्वयं आकर दर्शन दो।” इस प्रकार बच्चों और जवानों को खेल-खेल में अनेक चमत्कार दिखाते और साथ-साथ भगवान् के पवित्र ओउम् नाम भी जपते जपाते रहते थे। यहां वे एक कटिवस्त्र भी बाँधने लग गये थे। क्योंकि नंगा रहना समाज में अच्छा नहीं लगता था।

यहां सर्दियों में रात के समय वे तालाब के अन्दर नाभि तक पानी में खड़े हो जाते और सारी रात पानी में खड़े रहते थे। गायत्री मन्त्र का जाप करते रहते थे। यहां पर भी तालाब के घाटों में रात्रि को पानी में लेटे रहते। इनके शरीर पर कछुए, मछली, सर्प आदि पड़े रहते। पर उनको ये नहीं काटते थे।

वे ॐ नाम के तो दिवाने थे ही। अतः वे लोगों को भी ॐ नाम जपाने के लिए किसी भी तरह से इकट्ठा कर लेते थे। एक बार नहीं गांव चोरकारसा में वे काला पजामा ऊँचा सा पहन कर और एक जनानी कुरती

पहन कर सिर पर तीन मिट्टी के पात्र (घड़े) रखकर गांव की गलियों में घूमें। लोगों के लिए एक तमाशा हो गया। जहां-तहां सब औरतें, बच्चे और पुरुष इकट्ठे हो जाते तब वे उनको ॐ गुरु जी का कीर्तन कराते। इस प्रकार गांव में जगह-जगह पड़ाव डालकर ॐ गुरु जी का कीर्तन करवाया। वे भगवान के ॐ नाम के जपने और जपाने में ही मनुष्य जन्म को सफल मानते थे। इस प्रकार सभी ग्रामवासी उनकी चमत्कार पूर्ण लीलाओं से तथा उनके त्याग, वैराग्य और विद्वता से प्रभावित थे। श्री चतर सिंह आदि भक्तों ने यह सब लीलाएँ स्वयं देखी और इन्हीं संस्कारों से फलीभूत आज भी उनके नाम और सिद्धान्तों पर तन-मन-धन से योगदान देते चले आ रहे हैं।

### (13) झाड़ों का बोझा सिर से ऊपर रहता था।

चौ. नसीब सिंह ने बताया कि मेरे पिता जी चौ. तेलू राम जी बताया करते थे कि एक दिन मेरे पिता जी खेत को देखने चले गये कि कोई खेत को झाड़ी (बेर) के पौधों को काट न ले क्योंकि उस समय घास की बहुत कमी होती थी। तो वहाँ देखा कि छोटा राम नंगे पाँव झाड़ों को इकट्ठा करके सुसले बना रहा है। उन पर लम्बे-2 मोटे कांटे थे। मेरे पिता जी ने कहा भाई छोटा राम हमारी गाय भैंस क्या खायेंगी। सारे झाड़ तो आप काट कर ले जाएंगे। छोटा राम बोला “पिता जी वह भी आपकी ही गाय हैं। नंगे पाँव देखकर वह कहने लगा कि क्या सुसले बनाते समय आपके पाँव में कांटे नहीं चुभते हैं। ब्रह्मचारी बोला - हम तो लोहे की बैरज्जियों को मोड़ देते हैं ये तो झाड़ के कांटे हैं। फिर भारी बोझा (गट्ठर) बनाकर उठा लिया। मेरे पिता जी कहने लगे लाओ मैं उठाऊँ। वो बोले नहीं मैं आराम से उठा लूंगा। मेरे पिता जी यह सारी लीला देखते रहे और विस्मित होते रहे। फिर कांटों की बाड़ थी उस पर से गुरु जी नंगे पाँव उतर गये। गुरु जी के सिर पर जो बोझा था वह गुरु जी के सिर से एक हाथ ऊँचा था जोकि दो पहलवान आदमियों से भी उठने वाला नहीं था

उन्होंने उसे घर लाकर डाल दिया।

मेरे पिता जी ने चौ. फूल सिंह ने कहा - भाई तू इससे काम मत करवाया करो क्योंकि यह तो कोई सिद्ध महात्मा है। आज मैंने अपनी आँखों से इसकी लीला देखी। झाड़ के बड़े-2 कांटों के नंगे पाँव बोझे बनाए। कोई काँटा पाँव में नहीं चुभा। उन्होंने बोझा अकेले ने उठा लिया। वे नंगे पाँव कांटेदार ऊँची बाड़ के ऊपर निकल आये। मैं यह देखने के लिए इसके पीछे लग गया। इनका बड़ा भाई बोला आज ही मैंने इसको कह दिया कि भाई मैं तो खेत में काम करता हूँ तू पशुओं के लिए झाड़ आदि ले आया कर।

सायं के समय गुरु जी के बड़े भाई उन झाड़ के सूसलों को हाथ से काटा करते थे। रात के 12 बजे गए लेकिन वे सूसले खत्म नहीं हुए दो सूसले कांटे 4 सूसले और उसमें पता नहीं कहाँ से आ जावें। ये छोड़कर सो गए। प्रातः काल नसीब के पिता जी चौ. तेलूराम को बताया कि पता नहीं चाचा गुरु जी में क्या शक्ति है। मैं सायं के समय काटने लगा 12 बजे तक काटता रहा घास का कूँदड़ा (ढेर) लग गया फिर भी बचे पड़े हैं। बस आज तो मैंने निश्चय कर लिया। आगे से इसे काम के लिए नहीं कहूंगा। चौ. तेलूराम ने कहा कि भाई मैंने तो कल ही इसे झाड़ों को इकट्ठा करते हुए और भारी बोझा सिर से ऊँचा देखकर ही इसे भगवान् मान लिया था।

### (14) भाई मर गया बेटा बन कर आयेगा :-

एक बार गुरु जी उच्चाना भक्त लक्ष्मण शर्मा के यहाँ गये तो उसका भाई मर गया था। वह बहुत दुःखी था। गुरु जी आगे अपनी दुःख भरी कहानी सुनाई। गुरु जी ने उसे सान्त्वना दी और कहा कि वह तेरा बेटा बन कर आयेगा। कुछ समय बाद भक्त का लड़का हो गया। भक्त ने उससे भाई वाला व्यवहार किया। गुरु जी के शब्दों पर विश्वास था।



### (15) चलती रेलगाड़ी से कूदना :-

श्री लक्ष्मण शर्मा उच्चाना (करनाल) ने बताया कि हमारे खेत रेलवे लाइन (करनाल-कुरुक्षेत्र) के पास थे। गुरु जी बहुत तेज चलती एक्सप्रेस गाड़ी में से छलांग लगा देते थे। यह हमने एक बार नहीं कई बार देखा है। हम पूछते गुरु जी आप इतनी तेज चलती गाड़ी में से कैसे कूद गये आपको चोट नहीं लगी? गुरु जी ने कहा - नहीं मुझे कोई चोट नहीं लगी। वे बताते थे कि हम ईख, बाड़ी खोदते और गुरु जी को कह देते थे कि गुरु जी वर्षा की जरूरत है। गुरु जी ने कहा कोई बात नहीं - साफ आसमान में देखते ही देखते बादल हो जाना और मूसलाधार वर्षा बरसाना ये उनके दिव्य चमत्कार हमने स्वयं देखे।

### (16) खीर की कहानी - (भक्त सतपाल काब्रछा) :-

सतपाल काब्रछा ने बताया कि मैं अपने गाँव में सो रहा था। गुरु जी स्वप्न में दिखाई दिये ओर ओउम् तत्सत् बोले। मैंने पूछा सुनाओ गुरु जी क्या बात है? गुरु जी बोले की खीर खाये बहुत दिन हो गये हैं। भाई खीर खिलाओ। मैंने कहा गुरु जी कहाँ खिलाऊँ। गुरु जी ने कहा कि चौधरी लाल सिंह पूण्डरी के नोहरे (बैठक) के आगे बैठा मिलूंगा। मेरी आँख खुल गई और मैंने इस सपने को सच्चा समझकर गुरु जी का तो खीर खाने को दिल कर रहा है। मैंने अपनी माता जी को जगाया। भैंसों का दूध निकाला। कड़ाही आदि अच्छी तरह से मांजी। खीर पकनी शुरू हो गई। मैं ताजी मिट्टी की बिलौनी और कापन कुम्हारों से लाया। बिलौनी पूरी खीर की भर ली और आटा लगाकर काप चेप दिया जिससे हवा के कारण खीर ठण्डी न हो जावे। क्योंकि पौह महीने का समय था। खद्दर की चादर का पूरा मंडासा मारा और बिलौनी सिर पर रख कर चल दिया। मैं पैदल चला लोधर, भालन, कलासर, बड़सीकारी, पाई और पूण्डरी पहुंचा। और जो स्वप्न में बात कही थी कि मैं लालस के

नोहरे में बैठा पाऊंगा तो वहाँ ही गुरु जी मुझे बैठे मिले। कापन उतारा तो खीर बिल्कुल गर्म निकली। गुरु जी ने कहा बेटा कहाँ से लाये हो? तो मैंने कहा गुरु जी अपने घर से लाया हूँ। तो मैंने कहा - गुरु जी मैं वापिस जा रहा हूँ क्योंकि मैंने सांय को पशुओं का दूध निकालना है। जो 25 कोश की दूरी पर गाँव काब्रछा है पूण्डरी से। गुरु जी ने वहाँ संगत में पहले ही प्रचार कर दिया था। कि सतपाल खीर लेकर चल रहा है और तुम्हें खीर खिलावेंगे यह होता है गुरु शिष्य की शुद्ध आत्मा का प्रमाण कि 25 कोस दूर बैठे बात-चीत कर रहे हैं।

### (17) गाँव के लाल डोरे के अन्दर साधुओं का पड़ाव :-

एक दिन गुरु जी अपने भाई के घर के आगे बैठे थे। क्योंकि वहाँ नीम का पेड़ था। छाया होने के कारण आस-पास के लोग वहाँ बैठ जाया करते थे। हुक्का आदि पीते रहते थे। गुरु जी खाट पर बैठे थे जो नीम की निबोली गिरती उसे चुस लेते और फैंक देते थे। काफी लोग बैठे थे और सत्संग चल रहा था। चौ. हरनाम सिंह का घर पास ही था। वर्षा हो रही थी। गलियों में पानी भर जाता था। चौ. नसीब सिंह भी वहीं बैठे थे। चौ. हरनाम सिंह अपने हाथों में जूती लेकर आये और कहने लगे। गुरु जी हमारा गाँव बहुत नीचे में है। आस-पास का सारा पानी गाँव में आ जाता है। क्योंकि गाँव बहुत नीचे में था। गुरु जी कहने लगे कोई बात नहीं गाँव गिरकर ऊंचा बन जायेगा।

यही प्रसंग गुरु जी ने लगभग कई-बार कई जगहों पर अपने प्रवचन में यह कहा कि मेरा ऐसा मन करता है कि सारे गाँव (चूहड़माजरा) को गिराकर नए सिरे से बसाया जाये, इसमें चौपड़ सड़क हो। सभी प्रकार की सुविधा हो। लोग कहते गुरु जी हमारा गाँव गरीब है इतना पैसा कहाँ से लायेंगे। गुरु जी कहते कि जब मैंने बनाना होगा तो पैसा तो अपने आप आ जायेगा। आज 70-80 वर्षों पहले कही बात सामने आ गई गाँव में पुराने मकान तो गिर रहे हैं लोग गिरा रहे हैं।



सड़कों के किनारे अच्छी से अच्छी कोठी बना रहे हैं। गुरु जी को इतने दिन पहले यह सब दिखाई देता था। मामराज चौ. भगवाना राम ने वार्तालाप की-

### (18) आज भी उसी का सहारा:-

श्री सतपाल काब्रछा ने एक घटना और सुनाई कि आज भी हमें उसी गुरु महाराज का सहारा है। अभी कुछ दिन पहले मेरा एक राजनैतिक पंडित के साथ काफी मेल-जोल था। गूढ़ मित्रता थी। मेरा एक लड़का उग्रवाद के केश में फँस गया था। उसके निकलने का कोई रास्ता नहीं था उस पंडित जी ने इस केस में हमारी बहुत सहायता की। परन्तु लोभ के कारण उसने जमीन की फर्द ले ली और मेरे से 420 से अंगूठा लगवाना चाहता था। स्वामी जी ने रात्रि में मुझे साक्षात् दर्शन दिए और कहा - बेटा कल एक पंडित तेरे से अंगूठा लगवाने आवेगा आप उस पर अंगूठा न लगाना।

ऐसा ही हुआ प्रातः काल वह पंडित आया और कुछ कागजों पर मेरा अंगूठा लगवाने लगा। क्योंकि मैं अनपढ़ था। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अंगूठे लगाने से इन्कार कर दिया।

भक्त सतपाल काब्रछा ने एक और घटना सुनाई कि एक मेरा प्रपोता बीमार हो गया। आस-पास के सभी डाक्टरों ने जवाब दे दिया। उस लड़के को रोहतक पी.जी.आई. में ले गये। राजा भक्त सतपाल का पोता रोने लगा क्योंकि बच्चा बहुत बीमार था। गुरु जी ने दर्शन दिए और कहा कि तेरा लड़का ठीक हो जाएगा। तुरन्त ही लड़का ठीक हो गया। डाक्टरों ने छुट्टी दे दी यह घटना सतपाल ने अपने मुखारविन्द से सुनाई जो उसने प्रत्यक्ष देखा। गुरु जी तो सदा से ही भक्तों के रखवाले हैं। जो सच्चे हृदय से गुरु जी को याद करते हैं तो गुरु जी उनकी जरूर खबर लेते हैं और सहायता करते हैं।

### (19) खेलने में सबसे आगे :-

चौ. नसीब सिंह चूहड़माजरा ने बताया कि गुरु जी खेलने में सबसे आगे रहते थे। उस समय डण्डा चूम्बी खेल खेलते थे। डण्डा नीचे चूम्बना होता था। एक लड़के की पोथ (बारी) होती थी - 6-7 लड़के बड़ वृक्ष पर चढ़े होते थे। एक का हाथ लगाना होता था। गुरु जी वृक्ष पर एक टहनी से दूसरी टहनी पर ऐसे कूद मारते थे जैसे बन्दर छलांग लगाते हैं। वृक्ष के ऊपर से नीचे कूद मारकर डण्डा चूम लेते थे। वे खेलने में सबसे आगे रहते थे उस समय के बुजुर्गों से भी यह बात सुनने को मिलती है।

### (20) कीचड़ में पाँव ने गिला होना :-

चौ. नसीब सिंह चूहड़माजरा निवासी ने बताया कि हमने एक बार नहीं कई बार गुरु जी के पीछे चलकर देख लिया। कहीं भी पानी के अन्दर या कीचड़ में हम तो जूती निकालकर चलते थे और कीचड़ में धंस जाते थे परन्तु गुरु जी उसी कीचड़ के पानी से सूखे निकल जाते थे। इसको भगवान् की माया समझो या उनकी रिद्धि-सिद्धि की बात समझो।

ऐसी घटनाओं का जिक्र तो काफी लोगों से सुन लिया कि वे पानी पर चल लेते थे। कीचड़ में उनके पाँव नहीं धंसते थे। यहाँ तक कि काँटों पर भी वे चलते देखे गए। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि योगी पुरुषों के अन्दर यह शक्ति होती है। विभूति पाद का यह सूत्र देखिए-

**उदानजयाज्जल पङ्ककण्टकादिष्ठङ्ग उत्क्रान्तिश्च**

**वि.पा. !!39!!**

अन्वयार्थ - (संयमद्वारा) उदान के जीतने से जल, कीचड़, काँटों आदि में असङ्ग रहना और ऊर्ध्व गति होती है। यदा -

**ज्ञानी का संसार में किस विधि हो निर्वाह।**

जैसे जल के बीच में कमल रहे तरता ।।

‘पचासा’

**(21) दो केले ले आओ :-**

गुरु जी के शब्दों को लोग याद करते हैं। कभी किसी समय गुरु जी ने कोई शब्द कहा, उस समय उसका अर्थ नहीं समझें, बाद में गुरु जी के उन शब्दों को याद किया कि गुरु जी ने उस समय वह बात ठीक ही कही थी। एक समय की बात है कि ग्राम जड़ौला में गुरु महाराज जी का यज्ञ भण्डारा चल रहा था। ग्राम चूहड़माजरा से एक परिवार गुरु जी के दर्शन करने चला गया। गुरु जी के चरण कमलों में सबने ओउम् तत्सत् नमस्कार किया। गुरु जी एक लड़के को जो 8-10 वर्ष का था कह दिया कि सामने झोंपड़ी में से 2 केले ले आ। उस बच्चे ने चार केले उठा लिए। उसने दो-दो केले दोनों हाथों में उठा लिये। उस समय वह बच्चा था। गुरु जी ने कहा कि दो केले वहीं रखे दो ये गन्दे हैं। जबकि चारों केले अच्छे थे। दो केले तुम रखो। उस बच्चे ने दो केले वहीं झोंपड़ी में रख दिये। पर मन में यह बात रही कि केले तो सारे अच्छे थे। गुरु जी ने दो केलों को गन्दा क्यों कहा? कुछ दिन के बाद उस बच्चे की शादी हो गई और उसके चार लड़के पैदा हुए। भगवान् की माया थोड़े दिनों के बाद उसके दो बच्चे प्रभु को प्यारे हुए। उस भाई को गुरु जी के वे शब्द याद आये कि गुरु जी ने तो पहले ही कह दिया था कि दो केले रखो। दो केले गन्दे हैं। उन्हें वहीं छोड़ दो। यह भक्त गुरु जी के उन शब्दों को याद करके उनकी महिमा का गुणगान करता है कि गुरु जी ने आगे होने वाली घटना दिख रही थी।

**(22) तुरन्त पीड़ा बन्द हो गई :-**

श्रीमती अंगूरी देवी धर्मपत्नी भक्त चौ. गोरदन लुहारी ने एक चमत्कार पूर्ण घटना सुनाई कि मैं गुरु जी के मुख्याश्रम फतेहपुर-पूण्डरी में शान्ति महायज्ञ में गई हुई थी। मेरी बाजू में बहुत ज्यादा पीड़ा हो रही

थी। गुरु जी सब जानीजान थे। वे अचानक घूमते हुए मेरे पास आ गये। मैंने गुरु जी के चरण स्पर्श करके ओउम् तत्सत् नमस्कार किया। गुरु जी

दी। स्वामी भीष्म जी बोले नहीं-नहीं संत जी गुदड़ी मिट्टी में गन्दी हो जायेगी। फिर गुरु ब्रह्मानन्द जी बोले- गुरु जी यदि आप गुदड़ी नहीं बिछाने देते तो जमीन पर मैं लेटता हूँ और आपने मेरी कमर के ऊपर बैठना होगा। ऐसी अटूट श्रद्धा देखकर स्वामी भीष्म जी बड़े प्रभावित हुए और पिछली अपनी पाठशाला में रहने की कथा सुनाने लगे और उनकी निर्भयता और बहादुरी की अनेक घटनायें सुनाई और गुरु जी की प्रशंसा के गीत गाये। वहाँ गुरु जी ने स्वामी भीष्म जी का सभी तरीके से आदर सम्मान किया। स्वामी भीष्म जी शिविर से प्रसन्नता से विदा हुए।

उसके बाद स्वामी भीष्म जी गुरु जी के यज्ञों में जहाँ-तहाँ चले जाते थे। गुरु जी उनका बड़ा आदर सम्मान करते थे। एक रुप से गुरुभाव से मानते थे। गुरु जी मुरथल गाँव के यज्ञ में गये थे। वहाँ तो पब्लिक सब यज्ञों से ज्यादा थी। मुरथल के बस अड्डे के पास ढाकों वाले जंगल में एक महीना यज्ञ चला। उस यज्ञ में स्वामी भीष्म जी को हाथी पर बैठकर शोभा यात्रा निकाली थी। स्वामी भीष्म जी ने हाथी पर बैठकर कहा था कि कभी ब्रह्मानन्द जी सत्यदेव ब्रह्मचारी के रुप में मेरी पाठशाला में पढ़ते थे। और आज ये यहाँ तक पहुँच गये। (ये एक त्यागी, तपस्वी, ब्रह्मनिष्ठ महायोगेश्वर सिद्ध महात्मा हैं। मैं इनके बारे में एक “गुरु ब्रह्मानन्द बेहद” ग्रन्थ लिखूँगा।

विशेष देखें ज.गु. ब्रह्मानन्द चरित पृष्ठ सं. -232

### (26) मन्त्री को ढले फोड़ने का आदेश :-

एक बार गुरु जी के दर्शन कराने के लिए योगीराज सूर्यदेव एक हरियाणा के मन्त्री को सूर्य ग्रहण कुरुक्षेत्र के मेले के अवसर पर गुरु ब्रह्मानन्द जी के शिविर में ले आया। योगीराज सूर्यदेव जी ने मन्त्री जी को समझा दिया कि गुरु जी त्यागी महात्मा और सिद्ध महापुरुष हैं आप उनके आगे कोई अहंकार की बात मत करना और वे जो कहें वही बात मान लेना।

जब गुरु जी के शिविर में जाकर गुरु जी के दर्शन किये और वार्तालाप होने लगी। जल और सोमरस आदि पिलाया गया। मन्त्री महोदय गुरु जी के कार्यक्रम जैसे यज्ञ-हवन, सत्संग एवं भण्डारे का आयोजन और प्रबन्ध को देखकर बड़े प्रभावित हुए। मन्त्री जी गुरु जी से बोले ‘कोई सेवा बताओ गुरु जी! गुरु जी ने कहा कि भगवान् के ॐ, ॐ नाम को सच्चे दिल से जपो और जनता की निष्काम भाव से सेवा करो। मन्त्री ने फिर कहा, नहीं, नहीं गुरु जी कोई सेवा बताओ। गुरु जी ने कहा कि यज्ञ हवन चल रहा है जैसा आपको उचित लगे वैसा आप सेवा करो। मन्त्री जी के मन में था कि गुरु जी कहेंगे कि 5-10 टीन घी के और 5-10 बोरी चीनी के दे दो। तो मन्त्री जी ने फिर तीसरी बार कह दिया कि गुरु जी आप अपने मुखारबिन्द से सेवा का आदेश करो। गुरु जी ने कहा कि मन्त्री जी ऐसा करो एक ईंट ले लो और ये मैदान में ढले पड़े हैं। इनको फोड़ दो। जिससे जनता रात्रि में आराम से सोयेगी। आपको पुण्य मिलेगा।

मन्त्री साहब तो ऐसा सुनकर हक्का-बक्का रह गया। जाति का वह बनिया था। गुरु जी के त्याग और निर्भयता के शब्दों को सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। गुरु जी के चरणों में नमस्कार करते हुए बोला। गुरु जी आपके बारे में जैसा सुना करते थे कि आज के युग में स्वामी ब्रह्मानन्द जी जैसा त्यागी, कर्मठ और जनता का हितैषी महात्मा और कोई नहीं है। आज मैंने स्वयं अपने व्यवहार से पाया है। वास्तव में प्राचीन ऋषि और महर्षियों जैसे आप परोपकार के कार्य करते आ रहे हैं। वैसा ही सिद्धान्त आपका पाया है।

मैं गुरु जी आपसे अपनी गलती की क्षमा माँगता हूँ। और आपकी आज्ञा का पालन करता हूँ। मन्त्री जी ने एक ईंट लेकर 5 मिट्टी के ढले फोड़े। और अपना सौभाग्य समझा कि तन और मन से यज्ञ में सेवा करने का सौभाग्य गुरु जी की कृपा से मिला। और भण्डार में जाकर

आम भक्तों की पंक्ति में बैठकर मन्त्री जी और योगीराज ने प्रसाद ग्रहण किया। ऐसी-ऐसी घटनाएं उनके व्यक्तित्व की उनके जीवन में अनेक मिलती हैं। यह वार्ता योगीराज सूर्यदेव ने और भक्त बंसीलाल सेठ ढाण्ड ने लेखक को सुनाई।

### (27) बच्ची को चलने का आदेश :-

गुरु जी का यज्ञ अनुष्ठान गाँव लुहारी पानीपत में चल रहा था। उसमें कारदगढ़ गाँव से चौ. ज्ञानी राम कश्यप राजपूत गुरु जी के दर्शन करने आया। वह एक छोटी सी बच्ची को टोकरी में रखकर साईकल पर लाया। वह टोकरी गुरु जी के आगे रख दी। गुरु जी ने कहा कि इस कन्या को क्यों टोकरी में बैठा रखा है? चौ. ज्ञानीराम ने कहा कि गुरु जी यह चार-पाँच साल की हो गई। इसकी टांगे बचपन में कमजोर हैं यह चल नहीं सकती। गुरु जी ने कहा नहीं कन्या तो ठीक है। बेटी चलकर दिखाओ। उस कन्या में गुरु महाराज जी की कृपा से पता नहीं कहाँ से ताकत आ गई। वह कन्या स्वयं उठी और चलकर सबके सामने दिखाया। यह घटना चौ. टेकराम लुहारी ने अपने सामने देखा। विचारिये यह कोई साधारण चमत्कार था। ऐसे चमत्कार तो कोई पूर्ण पुरुष ही दिखा सकता है।

### (28) रोड़ कंवर भी ज्ञान देते हैं :-

एक बार गोपाल मोचन के मेले में गुरु जी का शिविर लगा हुआ था। तो गुरु जी एक दिन घूमते-2 ऐसे स्थान पर बैठ गये। जहाँ रोड़े ही रोड़े पड़े थे। साथ में भक्त बंसीलाल था। बंसी जी कहने लगे गुरु जी यहाँ तो रोड़ों पर बैठ गये। गुरु जी कहने लगे यह रोड़े भी ज्ञान देते हैं। यह समझाते हैं कि जगह को साफ करके बैठो। तब ही आप आराम से बैठ सकोगे। यदि रोड़ों पर बैठोगे तो वहाँ दुःख तकलीफ होगी। इसलिए रोड़ भी ज्ञान देते हैं।

गुरु जी का जन्म भी रोड़ जाति में हुआ था। कोई कह देता कि रोड़ क्या होता है? तो गुरु जी कह देते कि बम्बे रोड़, कलकत्ते रोड़। जो रास्ता दिखावे वहीं रोड़ है। जिस जगह आप पहुँचना चाहते हैं तो आपको रोड़ ही वहाँ पहुँचावेगा। गुरु जी ने कभी अपनी जन्म जाति नहीं छुपाई जैसे रविदास जी ने जगह-2 पर अपने भजनों में कहा कि कह गया रविदास चमार। वैसे सन्तों की अपनी कोई जाति नहीं होती। कई लोग प्रश्न करते कि रोड़ शब्द अंग्रेजी का है तो इस बारे गुरु जी कहते कि यह रोड़ शब्द भी तो किसी शब्दकोष से आया होगा। कबीर जी ने ठीक कहा है-

**कामी, क्रोधी, लोभी इनसे भक्ति न होय।**

**भक्ति करे कोई शूरमा जो जाति, वर्ण कुल खोया।।**

गुरु जी के समय में रोड़, जाति का कोई विशेष समाज में आदर, मान्यता नहीं थी।

परन्तु गुरु जी ने अपने जन्मजात को नहीं छुपाया बल्कि खूले शब्दों में किसी शास्त्रार्थ के समय खड़े होकर पहलवान की तरह धोती चढ़ाकर, सांतल पीटकर, ललकार कर कह देते थे कि यह रोड़ का छोरा मैदान में खड़ा है। जिसने जिस ढंग से हाथ मिलाना हो मिला लो। वह गुण्डा टोल ऐसा सुनकर चुपचाप से कान बोचकर गुरु जी के शिविर से निकल जाते। गाँव से खूब तैयारी करके आते थे कि आज तो ब्रह्मानन्द को गाँव से भगा ही देंगे। गुरु जी ऐसे तुफानों को सहज भाव से टाल देते थे। उनका तप का प्रभाव ही बहुत तेज था। मन में द्वेष की भावना रखने वाला तो उनके सन्मुख आने की हिम्मत ही नहीं रखता था। ऐसी-2 हर रोज लीलाएँ गुरु जी की लेखक स्वयं देखता था। जो बहुत अजीब थी।

### (29) भक्त की कन्धा लगाकर गाड़ी निकालना :-

मास्टर अर्जुन सिंह आहूँ गुरु जी का बहुत पुराना भक्त है। जो सन्

1958 में पूण्डरी पढ़ता था और गुरु जी के आश्रम फतेहपुर पूण्डरी में आना-जाना था। फिर बस्तली गाँव ने गुरु जी का यज्ञ अपने यहाँ नहीं होने दिया और यह घोषणा कर दी कि रोड़ बिरादरी के किसी गाँव में गुरु ब्रह्मानन्द जी का भण्डारा नहीं होने देंगे। अब ब्रह्मानन्द की पोल खुल गई है। यदि इनमें सिद्धि होती तो हमारे गाँव बस्तली में यज्ञ करके दिखाता। ऐसे अज्ञानी लोग गलत प्रचार करने में जुट गये।

मास्टर अर्जुन सिंह ने विचार किया कि इससे सुनहरी मौका और कब मिलेगा? महाभारत के वीर अर्जुन वाला जोश मास्टर अर्जुन सिंह आहूँ में आ गया। नास्तिक लोगों के कटु वचनों ने, गुरु जी के प्रति श्रद्धा और आस्था ने मास्टर जी को बेचैन बना दिया। तुरन्त गुरु जी के पास गये और आपने गांव में यज्ञ हवन एवं भण्डारा, सत्संग कराने की प्रार्थना की। इस तुफानी क्रान्ति आग में गुरु जी हम ही कूदेगें। और आप हमारे यहाँ आसौज मास के यज्ञ में पर्व छपवाओ।

गुरु जी ने मास्टर अर्जुन सिंह की श्रद्धा को देखकर महात्मा सोमानन्द जी को आसौज मास के यज्ञ के पर्व छपवाने का आदेश दे दिया। बड़ी शान्तिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न हुआ। क्रान्ति का तुफान एक दम शान्ति में बदल गया। उन विरोधियों की निन्दा होनी शुरू हो गई और गुरु जी की महिमा को ढोल पीटने शुरू हो गये। एक दम ऐसा बदलाव आ गया। भक्त लोगों की संस्था ज्यों की त्यों कायम हो गई।

उन्हीं मास्टर अर्जुन सिंह ने एक आपबीती घटना गुरु जी की सुनाई जो इस प्रकार से है। यह घटना यज्ञ से पहले की है। मास्टर अर्जुन सिंह जी एक अच्छे जर्मीदार भी हैं और उस समय खेती-बाड़ी का काम भी स्वयं करते थे। बड़े कर्मठ थे। एक दिन जीरी की ट्राली भरकर गाँव में ला रहे थे। सायं का समय था। रास्ता कच्चा था और उस रास्ते में पानी होने के कारण कीचड़ आदि बहुत था एवं खड्डे हो रहे थे। अचानक ट्रैक्टर उस कीचड़ (खाँचे) में धँस गया काफी देर ट्रैक्टर का जोर लगाते

रहे। पुराना ट्रैक्टर था। ट्रैक्टर नहीं निकल पाया। यदि ट्राली में जीरी उतारे तो चारों ओर पानी ही पानी था। उस समय लोगों के पास ट्रैक्टर बहुत कम होते थे और यह जीरी किसी को देनी कर रखी थी। वह इन्तजार कर रहा था। अब करे तो क्या करे? चारों ओर अंधेरा छा गया। दूसरा साथ में कोई साथी भी नहीं था। मास्टर जी के मन में विचार आया कि गुरु महाराज जी की प्रार्थना कर लूँ। गुरु जी मैं हार गया। बहुत दुःखी हो गया। मेरे ऊपर दया करो और मेरा ट्रैक्टर निकाल दो। आपकी बड़ी कृपा होगी। गुरु जी का ध्यान करके मैंने ओउम् तत्सत् से बाहर निकल गया जो बहुत बुरी तरह से धँसा हुआ था। निकलते ही मास्टर अर्जुन सिंह जी ने गुरु जी की जय मनाई और धन्यवाद किया।

इस घटना के कुछ दिनों के बाद मास्टर जी गुरु के आश्रम रसीना में गुरु जी के दर्शन करने गये। जब गुरु जी को ओउम् तत्सत् नमस्कार किया तो गुरु जी कहने लगे मास्टर जी कीचड़ (खाँचे) में तो न बाड़ा करो। गुरु जी कहने लगे मास्टर जी ट्रैक्टर निकालते समय यह खोवा (कन्धा) छिल गया है। मास्टर जी ने स्वयं गुरु जी का छिला कन्धा देखा और बहुत पश्चाताप किया और अपनी गलती की क्षमा याचना माँगी।

ऐसी चमत्कार पूर्ण घटना गुरु जी की जीवनी में बहुत मिलती हैं। गुरुकुल ओउम् पुरे में रहते हुए। असन्धथाने में दो ब्रह्मचारियों को सोटी मारी और निशान गुरु जी की कमर पर उभरे मिले।

देखें ज.गु. ब्रह्मानन्द च. पृ. सं. - 169

### (30) पानी पर चले :-

एक बार गुरु जी मुन्दड़ी सरसा नहर के पश्चिम की ओर खड़े हुए थे। सूर्य भगवान् की वन्दना कर रहे थे। भक्त शिबूराम एवं कुछ भक्त सरसा नहर के पूर्वी तट पर खड़े थे। भक्तों ने गुरु जी को ओउम् तत्सत् किया और अपने पास बुलाने के लिए रुक्का मारा। गुरु जी ने कहा कि पुल से आऊँ या नहर में से आऊँ। नहर में काफी पानी भर रहा था। भक्त

शिबूराम ने हंसी में कह दिया कि गुरु जी पुल से तो सारी दुनियां आती है। आप तो नहर के पानी के ऊपर से चलकर आओ। आप तो गुरु जी योगी पुरुष हैं।

गुरु जी नहर के पानी के ऊपर से चलकर आ गये। भक्त लोगों को बड़ा पश्चाताप हुआ।

भक्त शिबूराम मुन्दड़ी ने एक और अद्भुत घटना गुरु जी की सुनाई। एक बार गुरु जी सरसा नहर मुन्दड़ी के पुल पर बैठे थे। कैथल से कार में एक भक्त लोग आया। उसने गाड़ी रोक कर गुरु जी के दर्शन किये और करनाल चलने के लिए कहा। गुरु जी ने इन्कार कर दिया। जब वह भक्त करनाल नहर पर पहुँचा तो गुरु जी बिना किसी साधन के करनाल नहर के पुल पर बैठे पाये। यह देखकर भक्त बड़ा विस्मित हुआ।

### (31) गुरुजी की बाँसुरी से जंगली जानवर इकट्ठे हो जाते थे :-

यह घटना फतेहपुर के भक्त जयकिशन के सुपुत्र राम ने सुनाई कि एक दिन गुरु जी मेरे को फतेहपुर की झील में ले गये। वहाँ गुरु जी एक वृक्ष पर चढ़ गये। मेरे को कहा कि पाँच मिनट आँख बन्द कर ले। गुरु जी ने बाँसुरी बजाई और पाँच मिनट के बाद मेरे को आँख खोलने के लिए कहा वहाँ तो जंगल के जानवर, सर्प, मोर, गीदड़ अन्य जीव जन्तु खड़े मिले। ऐसी मधुर बाँसुरी गुरु जी बजाया करते थे।

गुरु जी की बाँसुरी की आवाज सब लोग पहचान लेते थे। एक बार प्रातः 4 बजे सर्दी के मौसम में फतेहपुर की झील में गुरु जी ने बाँसुरी बजाई। फतेहपुर गाँव की माताएं नंगे पाँव 4 बजे वहाँ दौड़ी-2 गईं। उस समय झील में गुरु जी पानी में बैठे थे। सर्दी के कारण माताएं ठिठूर रही थी। (गुरु जी ने अन्दर से ही एक रजाई माताओं पर फैंकी जो चालीस माताओं पर आ गई और सर्दी से बचाव हो गया।)

ऐसी-ऐसी अनेक चमत्कार पूर्ण घटनाएं हैं, जो सत्य प्रमाणित

हैं। यदि एक भक्त से उनकी बातें सुनने लगे तो एक महाभारत का ग्रन्थ बन सकता है।

### (32) गुरु जी सच्चे भगवान थे

महात्मा ज्ञानानन्द जी ने आज के युग के भगवानों के पोप लीला सुनाई। एक बार पूण्डरी में किसी संस्था का बालयोगेश्वर आया। उसका भारत के कोने-कोने में प्रचार था। उसे बाल योगी के नाम से भगवान् मानते थे। मैं भी भगवान् के दर्शन करने चला गया। भगवान तो रैस्ट हाऊस में बंद कर रखा था। उसके आगे पहरेदार लठ लिये खड़े थे। हजारों की संख्या में लोग दर्शनों के लिए भूखे-प्यासे खड़े थे। परन्तु उसके बोड़ी गार्ड किसी को भी अंदर नहीं जाने दे रहे थे। वे कह रहे थे कि रात्रि में 8 बजे मंच पर ही भगवान के दर्शन करना। मैं कुछ देर वहाँ घूम फिर कर वापिस आश्रम में आ गया। गुरु जी ने मेरे से पूछा कि ज्ञानानन्द कहाँ गये थे। मैंने कहा गुरु जी मैं तो भगवान् के दर्शन करने गया था। गुरु जी बोले फिर भगवान् के दर्शन हो गये। मैंने कहा नहीं जी वे तो कमरे अन्दर बंद है। हमारे से कहा कि रात्री 8 बजे दर्शन होंगे। गुरु जी बोले फिर तूने क्या कहा। मैंने कहा - कि हमारे गुरु जी हमारे भगवान् तो हर समय मैदान में बैठे रहते हैं। कोई भी किसी समय वार्तालाप कर सकते हो। शंका समाधान, वार्तालाप के लिए सभी के लिए हर समय उनके दरबार में दरवाजा खुला रहता है। गुरु जी दुखियों के दुःख सुनते हैं और उन्हें भगवान् के ॐ नाम जपने के लिए कहते हैं।

काफी आस-पास इलाके के लोग भी गुरु जी के पास आये उन्होंने भी बाल योगेश्वर की चर्चा की और सबने यह कहा कि सब संस्थाओं में फराड और पोपलीला भरी हुई। आज के युग में तो स्वामी ब्रह्मानन्द जी ही साक्षात् भगवान् है। वे निर्भय हैं उनके दरवाजे आगे कोई पहरेदार नहीं होता। चाहे आधी रात भी जाकर शंका समाधान कर लो।



आये हुए व्यक्ति को जलपान और भोजन कराते हैं विश्राम के लिए जगह देते हैं। अपना स्पष्ट प्रचार करते हैं। कि भगवान् का सच्चा नाम ओउम् है। इसका हमें जप करना चाहिए। इससे हमें परमात्मा को प्राप्ति होती है। गुरु जी तो सचमुच हमारा देशी भगवान् है। इनका वेदमत है। बाकी भगवानों में तो निरी पोपलीला भरी हुई है।

इस बाल योगेश्वर के आने पर स्वामी जी का महत्व बहुत ज्यादा बढ़ा और काफी संख्या में लोग गुरु जी के अनुयायी बनें।

### (33) नहर पर बैठे कीर्तन करते पाये

पं. श्री शिवराम शर्मा (चण्डीगढ़) मुन्दड़ी नहर की कोठी पर एस.डी.ओ. लगे हुए थे। उन्होंने गुरु जी की महिमा सुन रखी थी कि नहर के पास झील में कोई योगी महात्मा रहता है। वह नंगा और निराहार रहता है। एक दिन पौह महीने की कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, ओले पड़ने और वर्षा होने से ठंड बहुत ज्यादा थी। शर्मा जी और उनकी धर्मपत्नी गुरु जी को जंगल में ढूँढने गये और बितनी करके अपनी कोठी में ले आये। भोजनादि कराया और रात को एक कमरे में गुरु जी का सोने का प्रबन्ध कर दिया और आगे से ताला लगा दिया कि कभी गुरु जी दरवाजा खोलकर बाहर चले जावें और ठंड के कारण गुरु जी को सर्दी न लग जावे। यह उनकी बड़ी श्रद्धा की बात थी। परन्तु जिस योगी ने सभी सांसारिक बन्धन तोड़ दिये हैं। जिसने अपने शरीर से भी मोह नहीं रहा है। वे भला इस ताले आदि के बन्धन में कैसे रह सकते। प्रातः काल उनके लड़के, वेद, ज्ञान नहर पर घूमने गये तो वहाँ गुरु जी नहर के पुल पर ॐ कीर्तन करा रहे थे उनके पिता जी ने जाकर गुरु जी से क्षमा मांगी। गुरु जी आपकी माया तो अपरम्पार है।

### (34) गांव बरसाने में पाठशाला का खोलना और कीकर के वृक्षों को जड़ से उखाड़ना

गुरु महाराज जी ने बरसाने ग्राम में भी ढोलक बाजे के साथ उपदेश किया। लोगों ने प्रेरणा की कि गुरु जी हमारे गांव में कोई पाठशाला नहीं है। आप संस्कृत पाठशाला खोल दो। स्वामी जी ने कहा कि हमें स्वीकार है फिर पाठशाला कहां खोली जाये। लोग कहने लगे कि हमारे गांव में चौपाड़ है उसमें ही पाठशाला ठीक रहेगी। गुरु जी ने कहा कि हम गांव से बाहर कोई जगह देखेंगे। बाहर घूमकर जगह देखने पर बनी में जगह पसन्द कर ली। वहां पाठशाला के लिए छान बाँधने लग गये। अब छान में लकड़ों की जरूरत होती है। गुरु जी ने बनी में से लकड़ी काटने के लिए कहा। कुछ लोग बोले कि यह बनी हमारे गांव ने त्याग रखी है। अर्थात् इसमें से कोई लकड़ी नहीं काट सकते, हाँ यदि गांव सर्व सम्मति से कह दे तो काटी जा सकती है। स्वामी जी ने ढिंढोरा पिटवाकर सारा गांव इकट्ठा करवा लिया। कीकर काटने का प्रस्ताव गांव के आगे रख दिया। लोग अनाड़ी थे। सब नाट गये कि हम नहीं कोटेंगे। गुरु जी बोले तुम न काटो मुझे कुल्हाड़ा दो मैं काटूंगा। लोग बोले हम यह भी नहीं कर सकते। लोगों की पंचायत हजारों आदमियों की बैठी थी। स्वामी जी ने कुछ आवेश आया। कितने धूर्त लोग इनके बच्चों को ही पढ़ाने के लिए झोंपड़ी बाँध रहे हैं और यही अब रोड़ा अटकाते हैं। स्वामी जी के पास एक मोटी कीकर खड़ी थी। गुरु जी ने उसको पकड़ कर जड़ से जट दे सी उखाड़ कर उन बैठे हुए लोगों पर गिरा दी। फिर क्या था सब भाग खड़े हुए। इस प्रकार एक दो और उखाड़ी। गांव कीपंचायत हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई। और उसी समय कुल्हाड़े लाये गये कीकर काटनी शुरू कर दी, छान बांध दी कुछ दिन पाठशाला चली। परन्तु फिर छोड़कर आगे कदम बढ़ाया। जहां कुछ सफलता ना दिखी वहां स्वामी जी बंधें नहीं। तुरन्त उस जगह को छोड़ दिया क्योंकि किसी संसारी पदार्थों में तो स्वामी जी का मोह नहीं था और न मान-अपमान को कुछ समझते थे।

### (35) कड़ाके की सर्दी में भी गुरु जी को पसीना आना

इनके जीवन में अनेक ऐसी चमत्कार पूर्ण घटनाएँ हैं जो योगी पुरुष में ही घटित हो सकती हैं। इस सम्बन्ध में एक दिन ये सर्दी के पौह महीने में रात्रि के 12-1 बजे नंगे शरीर बाहर जंगल से भक्त जयकिशन की बैठक में आये। आकर इन्होंने ॐ की ध्वनि लगाई। भक्त जी उठ खड़े हुए। क्योंकि प्रायः ये जब जंगल से रात्रि के समय आते तो ॐ ध्वनि लगा देते थे और भक्त जी आवाज सुनकर दरवाजा खोल दिया करते थे। उस दिन भी भक्त जी ने कमरे के किवाड़ खोल दिये। भक्त जी कहने लगे कि - गुरु जी अन्दर आ जाओ और रजाई ले लो क्योंकि आपको सर्दी लग रही होगी? ये बोले मैं बाहर ही रहूँगा क्योंकि मुझे गर्मी लग रही है और ये बाहर ही बैठ गये। भक्त जी यह देख कर हैरान रह गया कि उस कड़कती ठण्ड में भी इनके शरीर से पसीना टपक रहा था। जबकि भक्त जी का कहना था कि “मुझे अन्दर कमरे में रजाई में भी सर्दी लग रही थी।” ऐसी अनेक क्रियाएँ भी उस योगी के पास थी।

### (36) झोंपड़ी न बांधने से वर्षा न हुई

एक बार की बात है कि स्वामी जी गुरुकुल ओउमपुरे में थे। स्वामी जी ने ग्राम वालों से ब्रह्मचारियों के लिए झोंपड़ी बाँधने के लिए कहा। परन्तु ग्राम वालों ने सोचा कि यदि हमने इसकी झोंपड़ी बाँध दी तो यह यहीं ठहरा रहेगा और हमें तंग करता रहेगा। अच्छा यही है कि इसकी झोंपड़ी ही न बांधी जाये। फिर मजबूर होकर ये बरसात में कहीं अपने आप चले जायेंगे।

आषाढ़ मास की यह बात थी। ग्रामवासी गुरु जी से कहने लगे कि “महाराज हम झोंपड़ी नहीं बांधेंगे। जिससे आप बरसात के होने से स्वतः ही कहीं और चले जायेंगे।” गुरु जी ने कहा कि अच्छा यह बात है तो बोले कि “मैं यहाँ से नहीं ढिगता (हिलता) चाहे हमें बरसात ही क्यों न बन्द करनी पड़े।” लोग बोले कि आप क्या भगवान हैं। जो वर्षा बन्द

कर देंगे। गुरु जी कहने लगे कि भगवान न्यायकारी है। वे सब जगह व्यापक हैं। कुदरत की ऐसी माया फिरी कि उस वर्ष भादों के मास तक एक बून्द भी नहीं पड़ी। सारा देश बिलबिला उठा। ग्राम के लोग गुरु जी के पास आते और क्षमा माँगते। अन्त में ग्राम जयसिंहपुर ने गुरुकुल में झोंपड़ी की जगह पक्के मकान बनवाये। जिस दिन मिस्त्री मकान की छत देकर उतरे उसी समय मुसलाधार वर्षा पड़ी सारे देश में यह पहली बार वर्षा हुई।

लोग कहने लगे कि महाराज जी यह तो आपका वचन पूरा निकला। पर झोंपड़ी न बनाने के लिए तो हम ने ही मना किया था तो और दूसरी जगह वर्षा क्यों न हुई। उन्होंने कहा “यदि दूसरी जगह बरसात होती तो तुम वहाँ से चारा अनाज ले आते। तुमको मारने के लिए सबको कष्ट देना पड़ा।” फिर तो उन्होंने और झोंपड़ी भी बाँध दी और उन्हें भगवान का रूप मानने लगे।

### (37) गुरु जी की भविष्य दृष्टि

यह बात उन दिनों की है जब गुरु ब्रह्मानन्द जी गुरुकुल ओउमपुरे में रहा करते थे। भारत पाकिस्तान का विभाजन होने के बाद महात्मा गाँधी की बड़ी इच्छा थी कि भले ही पाकिस्तान तो बन गया हो परन्तु हिन्दू-मुसलमानों में एकता की भावना तो रहनी ही चाहिए। इसीलिए उन्होंने घोषणा की कि “मैं हिन्दू-मुसलमानों में एकता कराकर रहूँगा।” धीरे-धीरे यह बात फैल कर गुरुकुल ओउमपुरे में विराजमान जगद्गुरु ब्रह्मानन्द जी के कानों में भी पहुँची कि महात्मा गाँधी जी हिन्दू-मुसलमानों की एकता के लिए व्रत रखेंगे, जैसा कि पाठक लोग अब तक वर्णित गुरु जी की जीवन शैली से यह अच्छी प्रकार से जान चुके होंगे कि गुरु ब्रह्मानन्द जी भविष्य द्रष्टा थे, योगिराज थे और भविष्य का अनुमान करने की अद्भुत दिव्य दृष्टि रखते थे।

इसलिए गाँधी की यह प्रतिज्ञा सुनते ही उनके मुख से अचानक

यह निकल गया कि यह बापू जी ने क्या किया। मानों कि वे महात्मा हैं परन्तु इस संसार में सारे सन्त या देव ही नहीं रहते अपितु असुर भी रहते हैं। इसलिए बापू जी हिन्दू-मुसलमानों की एकता तो क्या करेंगे? अपितु स्वयं उनको तीन गोलियों से भून दिया जायेगा लगता है अब बूढ़े का यशःकाय होने का समय आ लिया है और कोई इनको तीन गोली मारेगा। निश्चित ही इस बूढ़े की छाती में टैं, टैं, टैं करके तीन गोलियाँ लगेंगी जो इस देश और समाज के लिए बहुत बुरा होगा। यह बड़ी दुर्भाग्य की बात है कि हमारे बूढ़े बापू ने यह व्रत ले लिया है। चलो कोई बात नहीं यह सब तो समय की गति है इसमें किसी का कोई बस नहीं है।

गुरु जी एक सिद्ध पुरुष थे परमात्मा के साथ उनकी लौ लगी हुई थी। वह सदा धूर की वाणी बोलते थे इसीलिए इनके वचन की रक्षा के लिए तो अब महात्मा जी को जाना ही था अस्तु अगले दिन गुरु जी का भद्रपुरुष के साथ घोड़े पर बैठकर अलेवा गये वहाँ कांग्रेस का जलसा हो रहा था। गुरु जी ने वहाँ स्टेज के ऊपर जाकर यह कह दिया कि महात्मा गांधी की छाती में तीन गोलीयाँ लगेंगी। हिन्दू-मुसलमानों में बिना युद्ध के एकता नहीं हो सकती। यही बात गुरु जी ने असन्ध में भी कह दी। इस इलाके के लोगों को गुरु जी पर बहुत विश्वास था। अतः इनकी गांधी जी सम्बन्धी यह दुःखद भविष्य वाणी सर्वत्र इसी प्रकार से फैल गई जिस प्रकार सूखे जंगल में आग फैल जाती है।

आखिर पाठक जानते ही हैं। महात्माओं के वचन कभी असत्य नहीं होते और समय आने पर वही हुआ जिसका डर था गाँधी जी तीन गोलियों से मारे गये अगले दिन यह समाचार गुरु जी को मात्रे भक्त (फफड़ने वाले) ने सुनाया तो गुरु ने कहा कि यह होनहार थी यह तो होनी ही थी। बस कुदरत ने हमारे मुख से निकलवा दी।

परन्तु गुरु जी के द्वारा तीन चार स्थानों पर की गई घोषणा से यह समस्या पैदा हो गई कि सरकार को यह सन्देश होने लगा कि गाँधी की

हत्या में कहीं स्वामी जी की तो कोई भूमिका नहीं हो - अन्यथा उनको यह कैसे पता होता कि गाँधी जी शीघ्र तीन गोलियों से मारे जायेंगे। इसके परिणामतः थोड़ी देर में ही जंगल में पुलिस आ गई और थानेदार, कप्तान आदि ने गुरुकुल को चारों ओर से घेर लिया।

गुरुकुल के अन्दर गुरु जी एक कुरड़ी के ऊपर बैठे थे। पुलिस वालों ने अन्दर आकर पूछा कि ब्रह्मानन्द जी कहाँ हैं। गुरु जी ने कहा कि उसका तो पता नहीं कहाँ गये। पर तुम कहो। किसलिए आये हो। पुलिस वालों में एक दरोगा गुरु जी को जानता था। अतः वह कहने लगा कि गुरु ब्रह्मानन्द जी तो यही है। पुलिस के अधिकारियों ने कहा कि आप असन्ध के थाने में चलो। गुरु जी बोले आप बात बताओ। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि आपको कैसे पता था कि गाँधी जी मारे जायेंगे। और वह भी तीन गोलियों से। गुरु जी ने कहा कभी-कभी मुझे कोई ध्वनि सुनाई देती है कि तुम इस प्रकार की बात कहो! वह बात मैं कह देता हूँ और वह सत्य निकल जाती है।

अब ऊपर वाले की ओर से जो आवाज मुझे सुनाई दी और उसे मैंने कह दिया तो इसमें मेरा क्या दोष है।

यह सुनकर पुलिस अधिकारी कुछ शान्त हुए। फिर कहने लगा कि आपने मुसलमानों को भी 7-8 वर्ष पहले ही इसी प्रकार यहाँ से चले जाने के लिए कह दिया था और उनको जाना पड़ा। अब आप आगे बताओ कि क्या होगा। इन्होंने कहा भला मुझे क्या पता यह तो समय की बात है कि जो बात मुँह से निकल जाती है वही सत्य सिद्ध हो जाती है। (जैसा योग दर्शन में सत्य प्रतिष्ठा)

जैसे मैं आपको कह दूँ कि आपका लड़का घोड़े पर चढ़ेगा और गिरकर चोट खायेगा। यह सुनकर कुछ देर तो पुलिस अधिकारी वाद-विवाद करता रहा। पर स्वामी जी उसे मुँह तोड़ जवाब देते रहे अन्त में शान्त हो कर पुलिस वापिस चली गई। आश्चर्य की बात है कि जैसे

स्वामी जी ने कहा था कि तदनुसार अगले ही दिन अधीक्षक का लड़का घोड़े से गिर गया और घायल हो गया। अधीक्षक दौड़ता हुआ गुरु जी के पास आया और रोने लगा कि महाराज जी आप त्रिकालदर्शी हो सर्वज्ञ हो। आपके कथनानुसार मेरा लड़का घोड़े से गिर गया और उसे काफी चोटें आईं। आप उस पर दया दृष्टि करो। जिससे वह जल्दी ठीक हो जाये। गुरु जी ने कहा कि भाई इसमें मेरा कोई बस नहीं है यह तो कुदरत की ओर से प्रेरणा होती है जो मैं कह देता हूँ। बस इस घटना के बाद तो अधीक्षक उनका परमभक्त बन गया। जनता तो गुरु जी की बात पर अन्ध विश्वास करने लगी। इसके बाद सारी पुलिस और उसके अधिकारियों ने नंगे पाँवें, नंगे सिर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी और सदा के लिए भक्त बन गये।

गुरु जी ने पुलिस अधिकारियों को कहा कि याद रखो एक बात और होने वाली है। इस भारत वर्ष के अन्दर अनेक मत-मतान्तर फैले हुए हैं। अब यह नहीं रहेंगे। आर्यवर्त देश में केवल आर्य लोग ही रहेंगे कुछ दिनों में यहाँ मुसलमान-हिन्दू कहने वाला नहीं मिलेगा। सब आर्य होकर यहाँ रहेंगे। जैसा कि वेद में भी कहा है- कृण्वतो विश्वमार्य। केवल इतना ही काफी नहीं। हम आर्य लोग जब तक चीन, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान और रूस जैसी विदेशी शक्तियों का अच्छी तरह मुँह न पीट लेंगे। तब तक हमें ये शान्ति से नहीं बैठने देंगे। अन्त में विजय भारत की होगी। यतो धर्मः ततो जय। स्वामी जी का कहना था कि इस शक्ति संघर्ष में भारतवर्ष के पास भी कुछ नहीं बचेगा केवल जीत ही उसके हाथ में होगी।

उपर्युक्त घटनाओं के प्रकाश में निःसंकोच कहा जा सकता है कि गुरु जी एक अवतारी शिखर पुरुष थे और उनकी सिद्ध वाणी को दैवी प्रेरणा थी वह तो बात कहते थे वह अक्षरशः सत्य सिद्ध होती थी।

**(38) गुरु जी की दिव्य दृष्टि**

बलिवैश्व यज्ञ के प्रसंग में गुरु जी का निम्न प्रसंग भी अविस्मरणीय है। स्वामी जी मनुष्य के समान पशुओं से उतना ही प्रेम करते थे। इसलिए उनको मनुष्यों के नामों से ही बुलाया करते थे। वास्तव में शब्द ब्रह्म में ऐसी शक्ति है कि इसी से भगवान या देवता का आह्वान किया जाता है और उसी से मनुष्य भी अपना व्यवहार चलाता है। गुरु जी शब्द ब्रह्म की इस असीम शक्ति को पहचानते थे। इसलिए वे गऊओं को मनुष्यों के नामों से पुकारा करते थे।

उन दिनों गुरुकुल ओउमपुरे में एक बहुत अच्छी दुधारू गाय थी। गुरु जी उसे लक्ष्मी के नाम से बुलाया करते थे। गुरु जी का यह भी नियम था कि वे गाय के ब्याने के 40 दिन तक उसके दूध का सेवन नहीं करते थे। 40 दिन के बाद भक्त मात्रे राम को गुरु जी ने कहा कि आज लक्ष्मी गाय का एक किलो दूध निकाल लाओ। भक्त मात्रा राम बिना नैना (रस्सी बांधे) पूरा एक किलो दूध निकाल लाया। फिर गुरु जी ने उसको सोमरस में डलवाकर सभी ब्रह्मचारियों को पिलवाया गुरु जी की इस प्रवृत्ति को देखकर हमें वेद भगवान का वह मन्त्र याद आ जाता है जिसमें ऋषि कहते हैं कि हमने सोम पी लिया है। इसलिए अब हम अमृत हो गये हैं - आपाम् सोमं अमृता अभूम।। यह लक्ष्मी गाय महर्षि वशिष्ठ की कामधेनु के समान थी। गुरु जी को आश्रम में जब भी दूध की आवश्यकता होती थी। उतना दूध वह दे देती थी। परन्तु जो पैदा होता है उसकी मृत्यु निश्चित है। जातस्यः हि ध्रुवो मृत्युः गीता - क्योंकि शरीर नाशवान् होता है। इस लक्ष्मी गाय का भी अन्त समय निकट आ गया। जिसे गुरु जी ने अपने दिव्य दृष्टि से अनुभव किया। और कहा कि यह लक्ष्मी गाय 30 दिन के बाद अपना शरीर छोड़ देगी। इसके बाद उसका दूध कभी नहीं निकाला।

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ठीक 30 दिन के बाद पूर्णतया स्वस्थ लक्ष्मी गाय ने अपना शरीर छोड़ दिया। उन दिनों पाली के

रूप में सरदार तेजासिंह काम करता था। इसलिए उसने और भक्त मात्राराम ने गढ़ा खोदकर नमक के साथ उसकी अन्तिम क्रिया कर दी। लक्ष्मी गाय के जाने के बाद सारे गुरुकुल में शोक का वातावरण बन गया जिसे गुरु जी ने यह कहते हुए दूर किया कि यह लक्ष्मी तो बड़े घराने में जन्म लेगी और एक महारानी बनेगी।

### (39) चमत्कार पूर्ण घटना

एक बार की बात है कि एक सरदार गुरुकुल में अपने बेटे की बहू को लेकर आया। उसने सुन रखा था कि गुरु ब्रह्मानन्द जी महाराज एक सिद्ध पुरुष हैं जो वे कह देते हैं वह पूरा होता है और जिस तरह वे कहते हैं वैसा ही मान लेना चाहिए। उस सरदार ने जाकर 100 रुपये का नोट गुरु जी के आगे चरणों में चढ़ा दिया। उस समय वे आग के धूने पर बैठे थे। वह सरदार बोला कि गुरु जी मेरा भगन्दर का फोड़ा है और मेरे इस बेटे की बहू को लड़का नहीं होता।

उन्होंने कुछ गुस्से में आकर कहा कि इस सौ रुपये के नोट को आग में फूँक दे। मेरे पास में लड़के हैं क्या? उसने वैसा ही कर दिया। 100 रुपये के नोट को गुरु जी के कहने के अनुसार धूने में आग पर डाल दिया।

गुरु जी ने विचार किया कि मैंने तो वैसे ही कह दिया था और इसने सचमुच ही कर दिया। यह तो कोई श्रद्धालु भक्त है। उन्होंने कहा कि “इस सौ रुपये वाले नोट की राख को उठा ले और आधी शहद के साथ तुम चाट लेना और आधी अपने इस बेटे की बहू को चटा देना।” उसने घर जाकर वैसा ही किया और उनकी बात पर पूर्ण विश्वास रखा। एक वर्ष के अन्दर ही उस लड़की को लड़का हो गया और उसका फोड़ा भी ठीक हो गया। उसने अपने लड़के की बहू को साथ में लेकर गुरु जी की जाकर पूजा की।

ऐसा ऋषियों का अद्भुत चमत्कार होता है जो कि वे सहज

स्वभाव से कह देते हैं वैसा सत्य सिद्ध हो जाता है।

### (40) गुरुकुल ओउमपुरे में अद्भुत चमत्कार

छटी लगी ब्रह्मचारियों को और निशान पड़ा गुरु जी को :- हमारे भागसिंह फौजी (गाँव चूहड़माजरा) ने गुरु जी के बारे में एक अद्भुत चमत्कार पूर्ण घटना सुनाई है जो इस प्रकार से है:-

गुरु जी गुरुकुल ओउमपुरे में ब्रह्मचारियों को पढ़ाते थे। मैं भी उस समय वहाँ पढ़ा करता था। गुरु जी कहीं बाहर घोड़े पर चढ़कर गये हुए थे।

अचानक सायं सात बजे असन्ध से पुलिस आई और सरदार तेजासिंह और प्रेमानन्द को वहाँ से पकड़ कर असन्ध थाने में ले गई। ये सरदार तेजासिंह और प्रेमानन्द यहाँ गुरुकुल में सेवा करते थे और गुरु जी के शिष्य थे।

प्रातः काल स्वामी जी गुरुकुल में आये। पता लगा कि पुलिस तेजासिंह और प्रमानन्द को असन्ध थाने में पकड़ कर ले गई। गुरु जी ने कहा विद्यार्थियों सोमरस पी लो और चलो हम भी असन्ध थाने पर उसी प्रकार चढ़ाई करेंगे, जिस प्रकार पुलिस ने यहाँ हमारे गुरुकुल पर चढ़ाई की थी। यहाँ जंगल के गुरुकुल में छोटे-छोटे विद्यार्थी थे। यहाँ पर और कोई बड़ा आदमी प्रबन्ध के लिए नहीं था। वहाँ केवल 8-9 वर्ष से लेकर 14-15 वर्ष की उम्र तक के ही बच्चे थे। पीछे से किसी प्रकार की घटना हो जाती तो कौन जिम्मेदार होता? यह थानेदार ने बहुत भारी गलती की है। यदि वह चोर ठग था, तो हमारे होते हुए उसे पकड़ते। हमारे यहाँ रहते हुए वह चोर नहीं था, बल्कि एक समाज सेवक था। गुरु जी और 20-25 विद्यार्थी अपने-अपने केसरी रंग के झण्डे और डण्डे तथा तुम्बे लेकर गुरु जी के पीछे-पीछे असन्ध थाने में पहुँच गये। ब्रह्मचारियों की वेशभूषा से एक तपस्वी बच्चे नजर आ रहे थे। जिस रास्ते से निकलते सबका ध्यान उनकी ओर हो जाता था।



असन्ध थाने में जाकर झण्डे गाढ़ दिये और आसन बिछा कर ओउम् तत्सत् की ध्वनि बोलकर बैठ गये। गुरु जी विद्यार्थियों से अलग बैठ गये। अन्दर से थानेदार आया उसके हाथ में एक छोटी सी छंटी थी। उसने धमकी दी तुम यहाँ क्या लेने आये हो? ब्रह्मचारी केवल ओउम् तत्सत् ही बोलते थे। उसने गुस्से में अटलदेव विद्यार्थी और भगवतदेव को एक-एक छंटी जोरों से मारी और धमकी दी कि तुम यहाँ से चले जाओ नहीं तुमको भी हवालात में दे दिया जायेगा।

परन्तु थानेदार ने जो जोरों से छंटी मारी तो बच्चों ने सी तक भी नहीं किया और न ही बच्चों को चोट लगी। केवल इतना मुझे (भगवत देव उर्फ भाग सिंह) अनुभव हुआ कि किसी चीज ने स्पर्श किया। केवल हमने ओउम् तत्सत् ही बोला कोई भय हमारे अन्दर लेशमात्र भी नहीं आया।

इस घटना से थानेदार में भी कुछ भय उत्पन्न हुआ कि छोटे-छोटे बच्चे कैसे निर्भयता से बैठे हैं?

फिर थानेदार ने कहा कि तुम्हारा गुरु कौन है? उससे बात कराओ। किसी आदमी ने इशारा किया कि वह एक महात्मा बैठे हैं वही इनके गुरु जी हो सकते हैं। थानेदार ने एक ही वाक्य में कई प्रश्न कर डाले कि आप कौन हैं? कहाँ से आये हो, क्यों आये हो? गुरु जी ने कहा कि आप कल तेजासिंह को क्यों लाये हो? यह मारी शरण में आ गया था। हमारे पास आने पर वह चोर डाकू नहीं रहा यदि आपने पकड़ना भी था तो हमारे होते हुए पकड़ कर लाते हमारे पीछे गुरुकुल की जिम्मेवारी उसकी ही थी जंगल में अनेक छोटे-छोटे बच्चे थे। पीछे से कोई घटना घट जाती तो कौन जिम्मेदार होता? मुझे उत्तर दो।

वहाँ पर आने जाने वाले लोगों की भीड़ जमा हो गई। सारा यातायात बन्द हो गया। कार, ट्रैक्टर, ट्रक, साईकल सवार, पैदल जनता सब रूक गये। थानेदार घबरा गया और क्षमा माँगने लगा। बच्चों से

प्रभावित होकर उपस्थित जन-समुदाय थानेदार को धिक्कारने लगा। थानेदार गुरु जी के चरण पकड़ कर कहने लगा कि आप अन्दर चलो मुझे जो भी दण्ड दोगे वह स्वीकार होगा। गुरु जी अन्दर चले गये। प्रातः ग्यारह बजे जाकर सायं के चार बजे बाहर निकले। थानेदार ने अपनी गलती मानकर क्षमा माँग ली थी।

4 बजे स्वामी जी बाहर निकले। थानेदार, पुलिस सिपाही साथ में थे। गुरु जी कहने लगे विद्यार्थियों, यह खड़ा है तुम्हारा मुलजिम तुम्हारे सामने इस थानेदार मुलजिम को अब आप जो चाहो सो दण्ड दो। यह दण्ड लेने के लिए तैयार खड़ा है और इसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। विद्यार्थी बोले गुरु जी आप ही दण्ड दो आप ही हमारे गुरु जी हैं, हम तो आपके ऊपर निर्भर हैं। ऐसा ही शिष्टाचार बनता था।

गुरु जी ने कहा कि छटी किस-किस विद्यार्थी को लगी थी। मैंने कहा (भगवत देव) मुझे लगी थी फिर अटल देव खड़ा हुआ कि थानेदार ने मुझे भी एक सोटी मारी थी। गुरु जी ने थानेदार को कहा कि इनकी उलफी उठाकर देखो। थानेदार ने देखा कोई निशान नहीं मिला। पब्लिक ने भी देखा। फिर गुरु जी ने कहा कि इधर आओ। थानेदार जी मेरा कपड़ा उठाकर कमर पर निशान देखो। देखने पर दो सोटियों के निशान उभर रहे थे। यह उपस्थित जनसमुदाय ने भी देखा। सहसा जनता के मुख से निकल पड़ा - गुरु ब्रह्मानन्द जी की जय हो “ॐ की जय हो।” जय ध्वनि से आकाश गूँजा दिया। थानेदार काँपने लग गया।

स्वामी जी ने कहा कि विद्यार्थियो तुम्हारा तेजासिंह तो गुरुकुल में पहुँच गया। प्रेमानन्द वहीं जयसिंहपुर के जंगल में है। अब थानेदार को माफी दो और गुरुकुल में चलो। ब्रह्मचारी गुरुकुल में चल दिये। थानेदार कहने लगा कि मैं सवारी का प्रबन्ध कर दूँगा।

गुरु जी बोले हम पैदल आये थे, और पैदल ही चले जायेंगे। आगे तेजासिंह गुरुकुल में सिंगरे तोड़ता मिला। बस तेजासिंह ने तो गुरु जी की



चरण वन्दना की और कहा – “ धन्य-धन्य गुरु जी आपकी अपार माया है। जय हो ब्रह्मचारियों की ! ” खुशी के मारे बहुत शोर मचा दिया।

एक द्विपेड़ी का भक्त उदमीराम गुरु जी के लिए गन्नों की पूली (गठड़ी) डाल गया था। विद्यार्थियों ने उसे चूसा। प्रातः काल तेजासिंह ने कहा कि गुरु जी थानेदार को हमारे गुरुकुल में भी आना चाहिए। उसे यहाँ बुलाओ। कुदरती गुरु जी की माया से प्रेरित होकर थोड़ी देर में थानेदार और उसकी धर्मपत्नी दोनों गुरुकुल में गुरु जी के दर्शन करने आ गये। प्रणाम करके बैठ गये और कहा गुरु जी यह देवी (उसकी धर्मपत्नी, थानेदारनी) यहाँ कुछ दिन गुरुकुल में सेवा करेगी गुरु जी ने कहा कि भाई यह गुरुकुल तुम्हारा है सेवा कर सकते हो। 2-4 दिन थानेदार की धर्मपत्नी ने रोटी आदि की सेवा की फिर थानेदार ने भी ठहरकर रात दिन आश्रम में झाड़ू आदि की सेवा की।

वह विद्यार्थियों से बातचीत करना चाहता था। गुरु जी ने उसे समझाया विद्यार्थियों से किसी प्रकार की बातचीत नहीं कर सकते, उन्हें बुलाने की कोशिश न करना, हवन-सन्ध्या और कथा में इनसे ज्ञान-उपदेश सुनते रहो। इस प्रकार जब तक वे असन्ध थाने में रहे तब तक हर रोज उसकी पत्नी या वह स्वयं, कभी-कभी दोनों गुरु जी के दर्शन व सेवा करते रहे।

जब उनकी बदली हुई तो वह गुरु जी से क्षमा माँगने आये। गुरु जी ने कहा कि भाई यह थानेदार सरदार जसमिन्दर सिंह अब यहाँ से जा रहा है विद्यार्थियों देखो अब यह तुम्हारी दृष्टि में कितना कसूरवार है विद्यार्थी बोले गुरु जी यह अब कोई कसूरवार नहीं रहा। यह अब सेवक बन चुका है। अब यह आशीर्वाद पाने के योग्य हो गया है। गुरु जी ने कहा भाई सच्चे मन से समाज की सेवा करते रहो और भगवान का ॐ नाम सुमरण करते रहो यही सुखी होने का रास्ता है। वह नमस्कार करके चला गया।

यह तो वही बात हुई सिक्ख सम्प्रदाय में गुरु तेग बहादुर सिंह के नाम से किसी ने कबूलत की कि मेरा गड्डा खाँचे से निकल जाये तो मैं गुरु जी की पूजा चढ़ाऊँगा। जब आये गुरुद्वारे में वहाँ तो निरे सन्त गद्दी पर बैठे। अब भक्त को यह समझ में नहीं आया कि मैं गुरु रूप में किस की पूजा करूँ फिर गुरु तेगबहादुर सिंह ने अपना कन्धा दिखाया कि भोले भाई यह कन्धे का रगड़ा लग रहा है फिर यह दृश्य देखकर सब गद्दी वाले सन्त शर्मिन्दा हुए।

यह वही घटना स्वामी जी के जीवन की भी समझनी चाहिए। ऐसी अनेक चमत्कार पूर्ण घटनाएँ स्वामी जी के जीवन में पाई जाती हैं।

#### (41) फरल गांव की घटना

स्वामी ब्रह्मानन्द जी की कृपा दृष्टि से भादों वदि षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी तदनुसार 7-8-9 सितम्बर दिन बुधवार से शुक्रवार सन् 1955ई. में गांव फरल (फल्गु-तीर्थ) पर अखिल विश्व कल्याणकारी शान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में डॉक्टर सत्यानन्द जी व महाशय धूमन सिंह का सहयोग बहुत अच्छा रहा और वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हुआ।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी गांव फरल को भी अपना ही गांव मानते थे क्योंकि चूहड़माजरा गांव, फरल गांव में से ही निकला था स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की बड़ी विचित्र लीलाएं होती थी जो साधारण व्यक्ति की समझ से बाहर थी। गुरु जी गांव फरल में महाशय धूमन सिंह के घर भी आते जाते थे। एक दिन महाशय जी की धर्मपत्नी गुरु जी से विनम्र भाव से प्रार्थना करने लगी कि गुरु जी महाराज मुझे भी कोई आशीर्वाद दो। मेरे घर कोई बच्चा जीवित नहीं रहता। बच्चे पैदा होने के एक-दो महीने पश्चात ही मर जाते हैं। गुरु जी बोले-माता जी कोई बात नहीं, भगवान् जरूर दया करेंगे। उनकी आप के ऊपर अवश्य कृपा दृष्टि होगी। कुछ दिनों के पश्चात् भगवान् की कृपा से उनके घर एक बच्चा उत्पन्न हुआ। अचानक गुरु जी भी घूमते-फिरते उनके यहाँ आ गये।

परिवार वालों ने खुशी से कहा - “गुरु जी हमारे घर में एक बच्चा हुआ है।” गुरु जी बोले - “लाओ उसे मुझे भी दिखाओ। परिवार वालों ने बच्चा लाकर गुरु जी को दे दिया।” गुरु जी ने आदेश दिया कि “जाओ इसे शमशान भूमि में रख आओ।” घरवालों की गुरु जी के प्रति अटूट श्रद्धा थी। बिना किसी हिचकिचाहट किये ही गुरु जी के आदेशानुसार 2-3 दिन के छोटे बच्चे को तुरन्त रात्रि के समय अकेले ही शमशान भूमि में छोड़कर आ गये। उनके वापिस आने पर गुरु जी ने कहा “कि छोटे बच्चे को मेरे कहने मात्र से तुम शमशान भूमि में क्यों छोड़ आये हो?” यदि वहाँ बच्चे को किसी जानवर ने काट खाया तो तब क्या होगा? जाओ जल्दी उसे उठाकर लाओ। वहाँ जाकर देखा कि बच्चा बिलकुल हंसता मिला। लाकर गुरु जी के चरणों में रख दिया। गुरु जी ने कहा यह क्षत्रिय बच्चा है। यह मरेगा नहीं। इससे ही आपका वंश चलेगा।”

बड़े होकर इस लड़के ने भी गुरु जी को अपना गुरु बनाया और सारा जीवन गुरु जी की सेवा करता रहा और इसी लड़के से इस परिवार का वंश चला।

यहाँ के यज्ञ की पूर्णाहुति बड़ी शान्तिपूर्वक हुई। इसके बाद स्वामी जी भ्रमण करते हुए गाँव मुरथल चले गये।

#### (42) मुरथल गांव की घटना

स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने फाल्गुन सुदि दसवीं, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी तदनुसार 21 मार्च से 24 मार्च सन् 1956 तक अखिल विश्व कल्याणकारी शान्ति महायज्ञ का आयोजन गांव मुरथल में किया।

भक्त सोहनलाल ने बताया - “गुरु जी गुरुकुल से पहली बार उनके पास मुरथल (सोनीपत) गांव में आये थे। स्वामी जी को ब्रह्मनाथ (नैना-धोंस जिला कैथल वाले) ले गये थे। महात्मा ब्रह्मनाथ जी मुरथल गाँव में स्वामी दातानाथ के पास आते जाते थे। दातानाथ के शिष्ट

छोटूनाथ थे। दातानाथ चौ. रतिराम नम्बरदार के बाप दादा के घर चार-चार महीने तक ठहर जाते थे। नम्बरदार के बाप, दादा धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे और साधु महात्माओं का आदर सम्मान किया करते थे। कुछ दिनों के बाद महात्मा दातानाथ का शरीर पूरा हो गया तथा रतिराम के सिर से उसके बाप-दादा का साया उठ गया। अब चौ. रतिराम नम्बरदार और उनके भाई सोहन लाल जैलदारी के नशे में तर्क-वितर्क करते थे और छोटूनाथ को तथा अन्य महात्माओं को यही प्रश्न करते कि पुराने सर्टीफिकेट से ही पेट पाल रहे हो या तुम में भी कुछ नया चमत्कार दिखाने की सिद्धि है। इस प्रकार साधुओं का उपहास करते और साधुओं को ढोंगी पाखण्डरी बताते थे।

पहले जो पूर्वज साधुओं को चार-चार मास ठहराते थे, बड़ी सेवा करते थे। वह सब बात अब जाती रही। श्री छोटूनाथ सरल हृदय महात्मा थे। वे उनके उपास को हंसी में उड़ाते हुए कहते कि किसी दिन तुम्हें सिद्ध महात्मा के दर्शन भी कराऊँगा। महात्मा छोटूनाथ स्वामी ब्रह्मानन्द जी से परिचित थे वे पहले की गुरुकुल ओउम्पुरे में स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पास आते जाते थे क्योंकि उनका डेरा पास के गांव द्विपेड़ी में था।

सफीदों से महात्मा ब्रह्मनाथ, छोटूनाथ और स्वामी ब्रह्मानन्द जी इकट्ठे हो गये। छोटूनाथ ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी को उपर्युक्त मजाक की चर्चा की और गाँव मुरथल चलने का आग्रह किया। महात्मा छोटूनाथ की प्रार्थना से वे तीनों मुरथल पहुँच गये। वर्तमान समय में मुरथल में जो स्थान गुरु ब्रह्मानन्द जी की कुटिया के नाम से जाना जाता है। वहाँ पर पहले धूना था। ये सब वहाँ ठहराए गये।

नम्बरदार चौ. रतिराम और चौ. सोहनलाल सन्तों के दर्शन करने पहुँच गये। श्री छोटूनाथ ने गुरु जी की ओर ईशारा किया कि ये हैं वे सिद्ध महात्मा। उन्होंने आते ही स्वामी जी से भी वही प्रश्न किया कि पुराने सर्टीफिकेट से घूम रहे हो या कुछ ज्ञान-ध्यान भी है। स्वामी जी ने कहा -

“कि यदि तुम में बुद्धि होगी तो परखा जायेगा, यदि एक अनपढ़ आदमी है तो वह क्या देखेगा कि इसके पास नया सर्टीफिकेट है या पुराना सर्टीफिकेट लिये ही फिर रहा है।”

इन दोनों को आगे से कुछ भी उतर नहीं सूझा। यह सच भी है। सन्तों की तो वही परख कर सकता है जिसे कुछ आध्यात्मिक विद्या का ज्ञान हो और जिस पर सन्तों की कृपा हो।

वे स्वामी जी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने स्वामी जी को अपना गुरु धारण कर लिया। 15 दिनों तक खूब शास्त्रार्थ चलता रहा। स्वामी जी ने उनको समझाते हुए कहा – सन्त महात्माओं की सेवा करने वाला व्यक्ति ही एक दिन किसी सिद्ध महापुरुष के भी दर्शन कर सकता है। कबूतरों को प्रतिदिन दाना डालते रहो तो कभी हंस भी आ जाते हैं।

इसके बाद स्वामी जी का मुरथल में प्रायः आवागमन बना रहा। यहाँ एक सेठ सत्यनारायण ने गुरु जी को समझ लिया था कि गुरु जी एक महान् योगेश्वर महापुरुष हैं, उसकी कोठी दिल्ली में थी। वह गुरु जी को तथा ब्रह्मचारी पूर्णानन्द, चौ. रतिराम एवं चन्द्रमणि शर्मा को अपनी कोठी पर दिल्ली ले गया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने उसके घर में पानी तक नहीं पिया। उसकी कोठी में लगे चिपश फर्श के सफेद और लाल रंग को गरीब लोगों का खून और मवाद बताया। स्वामी जी ने कहा “यह कोठी पाप की कमाई से बनी हुई है। इसलिए मैं यहाँ का अन्न जल ग्रहण नहीं कर सकता।” स्वामी जी वहाँ चार दिन ठहरे, उन्होंने एक गरीब व्यक्ति श्री लक्ष्मी नारायण के घर खाना खाया। सेठ लक्ष्मी नारायण के घर कोई सन्तान नहीं थी। स्वामी जी के आशीर्वाद से उसके घर एक लड़के ने जन्म लिया। चन्द्रमणि शर्मा ने सेठ सत्यनारायण के घर खाना खाया। उसके हाथों पर फुन्सियाँ निकल आई थी।

स्वामी जी मुरथल से चलने को उद्यत हुए तो चन्द्रमणि शर्मा ने उनको मना कर दिया परन्तु स्वामी जी ने यह कहते हुए प्रस्थान कर दिया

कि यदि मैं यहाँ रहा तो तुम्हारे हाथ ठीक नहीं होंगे। स्वामी जी का यह कथन सत्य प्रमाणित हुआ। गुरु जी के बस में बैठते ही चन्द्रमणि शर्मा के हाथ मुड़ने लगे जो कि पहले बिल्कुल नहीं मुड़ते थे। गुरु जी के जाते ही उसके हाथ बिल्कुल ठीक हो गये।

#### (43) नौशहरा शहर, जिला पूंछ, जम्मू-कश्मीर

ठाकुरद्वारा :- वैरागी सन्त महन्त मदन मोहन त्यागी के निमन्त्रण से स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने कार्तिक सुदि पचमी से कार्तिक सुदि पूर्णमासी तक तदनुसार दिन बुधवार तारीख 23 अक्तूबर सन् 1963 से दिन शुक्रवार तारीख 19 नवम्बर सन् 1963 तक नौशहरा शहर जि. पूंछ जम्मू/कश्मीर में एक अखिल विश्व कल्याणकारी शान्ति महायज्ञ का आयोजन किया। मिलिट्री के जवानों ने कार्तिक सुदि दसवीं को पक्का चबूतरा बनवाकर पंचरंगा झण्डा लहरा कर प्रार्थना की।

जब गुरुजी नौशहरा शहर जिला पूंछ जम्मू/कश्मीर में यज्ञ करने के लिए गये तो उनके साथ चार देवियां थी। रत्नी देवी, सुशीला देवी, माता नर्ही देवी और छोटी बच्ची कुसुमलता। इनके अतिरिक्त भक्त जयकिशन, चौ. राजमल, महात्मा नाथेश्वरानन्द, महात्मा सोमानंद और फौजी सुन्दर लाल सभी साथ थे। सभी देवियों और महात्माओं के हाथों में एक-एक पंचरंगा झण्डा था जिसके नीचे भाला और ऊपर पंचशुल लगा हुआ था। देवियों के हाथों में एक-एक डण्डा भी था। यह एक नये किस्म का समूह था जो दर्शकों को अपनी ओर हठात् आकर्षित कर रहा था। जिज्ञासुओं की इच्छा को उतरोतर बढ़ा रहा था। ये कौन हैं? कहां से आये हैं? कहां जा रहे हैं? इनका क्या उद्देश्य है? आदि आदि।

पठानकोट तक तो इनको किसी ने नहीं टोका। पठानकोट से आगे 150 मील पाकिस्तान की सीमा तक केवल मिलिट्री ही जगह-जगह पड़ी थी। पठानकोट से आगे साधारण आदमी का जाना मुश्किल था। ये पठानकोट के स्टेशन पर उतरे। उतरते ही मिलिट्री के जवानों ने इन्हें घेर

लिया। गुरुजी ने महात्माओं को कहा कि तुम पंचरंगे झण्डे की प्रार्थना करो और मैं बातें करता हूँ। महात्माओं ने झण्डे की प्रार्थना “झण्डा ऊँचा रहे हमारा” शुरू कर दी। इतने में सारे शहर में शोर मच गया कि कोई जासूस पार्टी आ गई और उसको मिलिट्री ने घेर लिया। मिलिट्री के एक आफिसर से बातचीत की। वह कहने लगा कि आप वापिस जाओ। आगे जाने का हुक्म नहीं है। गुरु जी ने कहा कि हुक्म तो थप्पड़ के अंदर बसता है। “जिसकी लाठी उसकी भैंस।” हुक्म तो डण्डे के अंदर बसता है। हम डण्डे को मजबूत कर के चले हैं। हमेशा डण्डा मजबूत होता है चरित्र से। कहा भी शील या चरित्र सब से उत्कृष्ट आभूषण होता है— “शीलं परं भूषणम्” हमें कोई रोकने वाला नहीं है। बस वह तो एक तरफ हो गया।

पहले स्वामी जी ने उन्हें शान्ति से समझाया कि हम यज्ञ सत्संग करने नौशहरा जा रहे हैं। परंतु वे नरमी से नहीं समझ ता फिर सख्ती का प्रयोग करना पड़ा। आगे बस द्वारा रात को जम्मू में एक मन्दिर में ठहरे। गुप्तचर पीछे लगे हुए थे। रात को दस बजे सिपाही और बड़े-बड़े फौज के आफिसर आये। क्योंकि पीछे से सी आई डी ने टेलीफोन से संदेश भेज दिया था कि यह महात्मा बड़ा अकड़बाज है। नखरे से बात करता है। गुरु जी बहुत बीमार थे। मन्दिर के बाहर बैठे हुए खांसी में खों खों कर रहे थे।

मिलिट्री के जवान आये और पूछने लगे महात्मा जी आप कितने आदमी हो। गुरु जी ने कहा कि हम दस आदमी हैं। वे बोले कि आप इन्हें जगाओ और मिलिट्री कैम्प में ले चलो। गुरु जी ने कहा कि आप शोर न करो। महात्मा लोग सो रहे हैं। ज्यादा बोलने से उनकी नींद में विघ्न पड़ेगा। इनको हम जगा नहीं सकते। इनमें से कोई भी मिलिट्री कैम्प में नहीं जायेगा। क्योंकि इन्होंने नियम पूर्वक तीन बजे उठ जाना है। तुम मेरे साथ बात करो। उन्होंने कहा कि आप को वापिस जाना पड़ेगा। आप आगे नहीं

जा सकते। गुरु जी ने कहा कि भले आदमी वापिस नहीं जाया करते यदि आप अपनी मां के गर्भ में वापिस जा सको तब तो हमें कह सकते हो। शूरवीर आदमी पीछे नहीं हटा करते आज हमारा ध्येय यह वाक्य है – “कार्य वा साधयेयम् देहं वा पतयेतम्” अर्थात् या तो हम अपना लक्ष्य ही प्राप्त कर लेगें या फिर अपना शरीर ही छोड़ देंगे। जगद्गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, महाराणा प्रताप, गुरु गोबिन्द जी के बच्चे, हकीकतराय और लाला लाजपतराय आदि अपने काम पर मर गये। पर पीछे नहीं हटे। हम तो मोर्चा बांध कर चले हुए हैं। वे तो दंग रह गये। हमारा पता लिख कर ले गये। इस बात का जम्मू शहर में बड़ा शोर मच गया।

प्रातःकाल गुरुजी अपनी शिष्य मण्डली के साथ नौशहर चले गये। वहां भी बड़ा हल्ला पड़ा। बड़े-बड़े आफिसर लोग आते और गुरुजी से प्रश्नोत्तर करते तो, लाजवाब हो कर चले जाते। गुरु जी से पूछते कि कितने दिनों तक रहोगे। गुरुजी ने कहा कि मैं चालीस दिन तक रहूंगा। दोनों समय यज्ञ सत्संग होता रहा। गुप्तचर पीछे लगे ही रहे, सारी मिलिट्री में शोर मच गया कि कई जासूस आए हुए हैं।

गुरु जी को बुलाने वाले फौजी सुन्दर लाल का आउट पास छीन लिया गया और उसे बन्द कर दिया गया। एक जमादार ने आकर बताया कि फौजी आफिसर सुन्दर लाल जवान को तंग कर रहे हैं। गुरु जी ने कहा कि उन आफिसरों को कह देना कि हमारे बारे में उस जवान को कुछ मत कहना और उसे कल बारह बजे से पहले छोड़ देना। बस उसी समय उस जवान को छोड़ दिया।

एक दिन जम्मू/पूँछ और इधर उधर के बड़े-2 आफिसर रात को आये। बैटरी से नीचे की ओर लाइट करके महाराज की का मुंह देखने लगे गुरुजी बोल उठे कि मैं जिंदा हूँ। सामने आकर बात करो। वह कहने लगे कि आप के पास क्या ताकत है तो इतनी धमकी देते हो। क्या तुम 8-10 आदमी मिलिट्री का सामना कर लोगे। गुरु जी ने कहा कि प्रत्यक्ष

को प्रमाण क्या ? जरा छोड़ कर तो देखो । तुम्हें दो दिन की रोटी नहीं दें तो तुम यहां ठहर सकते । यह मिल्ट्री तो आंख मिचते ही खत्म है । फिर तो वे ब्रह्मानन्द भगवान की जय-जयकार कर उठे । हजारों आफिसर प्रतिदिन दर्शन करने आते । क्योंकि प्रचार फैलने से गुरुमहाराज के जानने वाले हजारों सिपाही जो मिल्ट्री में इधर-उधर फैले पड़े थे, प्रतिदिन सत्संग में आने लगे और सेवा करते । जैसे पंजाब, यूपी, महाराष्ट्र, बिहार और राजस्थान आदि प्रान्तों में उनका प्रचार था । वे लगभग चालीस वर्षों से प्रचार करते हुए बाहर ही घूमते रहे । कुरुक्षेत्र भूमि में तो अभी ही आये थे ।

गुरुजी ने मिल्ट्री के आफिसरों से कहा कि हमारे बच्चे प्रातः तवी नहर में स्नान करने के लिए जाते हैं और सड़क पर तीन मील की दौड़ करते हैं । रास्तों में उन्हें कोई छेड़े नहीं और न ही बात करे । जो बात करनी है तो हमसे करे । हम से आज्ञा लेकर उनसे बात कर सकते हैं । यदि कोई जवान हमारे बारे में जानने के लिए बालकों (देवियों) को छेड़ बैठेगा तो, उसको अपनी खैर नहीं समझनी चाहिए ।

अन्त में मिल्ट्री के आफिसरों ने कहा पड़ा कि गुरुजी का समय विभाग और अनुशासन हम से अधिक है । इनके आने से हमारे सिपाहियों का उत्साह बढ़ा है कि हमारे पीछे भी कोई रक्षक है । दोनों समय पर यज्ञ होता था । साध्वी सुशीला देवी आदि देवियां हवन करती थी । नौशहरा शहर की आम जनता और मिल्ट्री के जवान भी यज्ञ में शामिल होते थे । एक दिन इसी प्रकार देवियां यज्ञ कर रही थी । बड़ी जोर से वर्षा हुई और ओले पड़ने शुरू हो गये । काफी मिल्ट्री के जवान और शहर के नर-नारी जो हवन पर बैठे थे वे वर्षा के आने से तितर-बितर हो गये । केवल यज्ञ पर 10 या 15 महात्मा और देवियां बैठी रहीं । उस समय गुरु जी अन्दर कमरे में बैठे थे । आप उस समय रजाई ओढ़े हुए थे, आग ताप रहे थे । उनको खांसी बड़े जोर की थी और साथ ही निमोनिया भी हो रहा था ।

एक दम यह देखकर कि बूंदें आ रही हैं झटसे नंगे बदन केवल एक ही धोती में बाहर आकर हवन की परिक्रमा करने लगे । देवियों ऐसा देखकर और अधिक उत्साह से मंत्र बोलने लगी । ओलों की झड़ी लग गई ओले हट गये, धूप निकल गई । कुछ ही समय बाद मौसम सुहावना हो गया । फिर से नर-नारियों की सत्संग में भीड़ हो गई । मिल्ट्री के जवान भी आ गये । इससे तो लोगों के दातों तले उंगली दबा ली । जनता बड़ी प्रभावित हो गई ।

गुरु जी ने कहा कि विद्यार्थियों तुम घबराओ मत, तुम वहां तप कर रहे हो जहां मिल्ट्री के जवान तप करते हैं । जहां गोलियों की वर्षा होती है । वहां यह जवान छाती तान कर आगे बढ़ते हैं । बर्फ के अंदर जहां पांव गल जाते हैं पर पीछे नहीं हटते । तो इन भाइयों को हम अनुशासन दिखाकर प्रोत्साहित करना चाहते हैं । इनकी हर प्रकार की सहायता करनी है । इनका हौंसला बढ़ाना है ।

एक बात से मिल्ट्री बड़ी प्रभावित हुई । क्योंकि उनका तीस जवानों का गुप पाकिस्तान के किसी मोर्चे को देखने के लिए प्रतिवर्ष जाया करता था । दो वर्षों से वे बर्फ में मोटरें समेत दब जाते थे । अब की बार वे गुरुजी का आशीर्वाद लेकर गये थे । अब की बार उनका बाल बांका नहीं हुआ । गुरुजी ने कहा कि वक्त पड़ने पर मुझे याद कर लेना । मैं वहीं मिलूंगा । इस पाकिस्तान की लड़ाई में उस पंचरंगे झण्डे के क्षेत्र में लगभग 150 गोले गिरे होंगे । परन्तु कोई नहीं फटा और न ही कोई नुकसान हुआ । इस बार तो अधिक खुश होकर मिल्ट्री के आफिसरों ने मिलकर नया पंचरंगा झण्डा लहराया और प्रार्थना की ।

गुरुजी ने मिल्ट्री वालों से कहा कि मैं यहां लोगों का खिजाया हुआ आया हूं । वे कहते थे कि तेरी फौज यही तुली खड़ी है । कहीं सीमा पर जाओ । पंचरंगे झण्डे की दूसरी प्रार्थना में आता है कि धर्म-अधर्म की जंग छिड़ी है, फौजें हमारी तुली खड़ी है ।



यहां पर आकर स्वामी जी ने अपने सब जानने वालों पर पंजाब के मुख्य कर्मचारियों, आफिसरों डीसी, एसपी, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और राष्ट्रपति को पत्र डाले कि भाइयों तुम ताकत लगा लो कि हम तो आ गये हैं मोर्चे पर। बस सब दंग रह गये और कहने लगे कि यह तो भगवान है। चाहे कुछ करें। इतने पत्र डाले कि डाकखाने के पत्र भी खत्म हो गये। सारे देश में धूम मच गयी।

यहां की जनता इन्तजार में थी कि हमसे चन्दा मांगेंगे। कहीं कहीं जनता में यह अफवाह फैलती रही कि मिलट्री ने गुरु जी को पकड़ लिया है कि पंचरंगे झण्डे वाला बाबा जी चीनी जासूस हैं परन्तु वे तो वहीं रहे फिर जनता में खबर पहुंची कि वे तो विश्व के बड़े भारी सन्त हैं, साक्षात् भगवान् हैं जो हमारे क्षेत्र में आये हैं। अन्य प्रान्तों से भी पंचरंगे झण्डे को लेकर नर-नारी टोली बनाकर पहुंचे। इससे बड़ा भारी प्रचार हुआ। फिर तो मिलट्री वाले स्वयं अपनी मोटरों में पठानकोट से बैठकर गुरुजी के पास छोड़ आते थे। प्रस्तुत लेखक और महात्मा शिवानन्द जी भी दोनों ही जम्मू से मिलट्री की गाड़ी में ही गुरु जी के पास पहुंचे थे।

मिलट्री को पूरा विश्वास हो गया था कि वे तो हमारे सहायक हैं। गुरु जी जवानों से पूछते थे कि आपको किसी प्रकार का कोई कष्ट हो तो हम को बता देना जितना होगा हम उसको दूर करने का प्रयत्न करेंगे। हम तो आप लोगों का दुःख सुख पूछने यहां आये हैं, आप लोगों का साहस बढ़ाने आये हैं कि आपको पीछे आपकी रखवाली के लिए भी हैं। वहां मिलट्री के मन्दिर का आचार्य भी आया। उसने सत्संग किया और गुरु जी के विचारों से वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने ही मिलट्री के आफिसरों से गुरु जी का परिचय करवाया कि ये सचमुच में ही महात्मा हैं। ये तो आत्मज्ञानी और ब्रह्मज्ञानी सन्त हैं, जो बड़े निर्भय और समाज सुधारक हैं।

मिलट्री ने तो शंका समाधान करने के बाद में इधर-उधर के बड़े

रिटायर जवानों को भी बुलाया और भगवान ब्रह्मानन्द के दर्शन करवाये। अन्त में बुढ़े रिटायर जवानों ने यह डायरी भरनी पड़ी कि वे केवल महात्मा ही नहीं हैं बल्कि एक विश्व क्रांतिकारी नेता भी हैं। जो एक दिन सारे विश्व को अपनी ऊँगली के ईशारे पर चलायेगा। उनका इतना बड़ा अनुशासन है जितना हमारी मिलट्री में कभी भी नहीं हो सकता। उनके जवान भी बड़े सदाचारी और ड्यूटी के पक्के थे।

अन्त में पूर्णाहुति के एक दिन पहले मिलट्री के हजारों जवान सत्कार करने आये। क्योंकि अगले दिन गुरु जी को पंजाब वापिस जाना था। आपको वहां मिलट्री में पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली आदि प्रदेशों के काफी लड़के ऐसे मिले जो आपको पहले ही जानते थे। उन्होंने आपके दर्शन किये और बड़ा सत्कार किया तथा पुनः आने के लिए विनम्र प्रार्थना की। रात्रि में गुरु जी बरामदे में बैठे थे। जनता अधिक होने के कारण बाहर खुले मैदान में बैठ गये। सत्संग होता रहा। अध्यात्मवाद पर चर्चा चलती रही। गुरु जी ने कहा कि कोई समय पड़े तो जवानो याद कर लेना। मैं आप को वहीं मिलूंगा।

मैं लेखक जगदीशानन्द भी उस समय वहीं बैठा था। इतना प्रसंग चलते चलते फिर गुरु जी ने कहा कि भाइयो! असली यज्ञ का लाभ तो आपको तब होगा जब आप बुराइयों को छोड़ोगे। भाइयो! बुराइयों को छोड़ना हमारे कोई बस की बात नहीं है। मेरे पर भी तम्बाकु देवता ने तीन वर्ष हुए दया की है। मैंने तम्बाकु छोड़ दिया यह कहने में मुझे डर लगता है। मेरे को तम्बाकु ने ही छोड़ दिया है। उस कुदरत ने ही मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है। विषयों को छोड़ना मनुष्य के बस की बात नहीं। यह कुदरत की ही गति है। जब भोग छूट जाता है, तभी जीव स्वतन्त्र हो सकता है।

19 नवम्बर सन् 1963 को प्रातः ठीक दस बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हो गई। घी, सामग्री, नारियल और नारियल गीरी से यज्ञ कुण्ड को भर दिया। शहर की माताओं ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में भाग लिया।



यज्ञ की पूर्णाहुति करके पूरी मोटर भर कर चली। मोटर के आगे दो पंचरंगे झण्डे लगा दिये। थोड़ी-2 दूर पर बैरियर होते थे और वहां मोटर रोकी जाती थी। गुरु जी के दर्शन स्वयं मिलट्री के जवान करते थे और जनता करती थी। स्वामी जी को अगली सीट पर बैठाया गया था। नौशहरे के मिलट्री आफिसरों ने सब आगे वाले जवानों पर खबर कर दी कि स्वामी जी अमुक तिथि को अमुन समय पर अमुक बस से आ रहे हैं। गुरु जी की चर्चा सुनने पर उन्होंने गुरु जी के दर्शनों की अभिलाषा प्रकट की थी। पठान कोट तक सड़कों पर मिलट्री खड़ी थी। वे सभी गुरु जी के दर्शन करते, नमस्कार करते और जय बोलते थे। जम्मू, पठानकोट के मिलट्री ने ठहराने की बड़ी कोशिश की। परन्तु स्वामी जी कहने लगे कि हमारे पास समय नहीं है। आश्चर्य है कि जो वापिस जाने को कह रहे थे। अब वही वापिस जाने से रोक रहे थे। थोड़े समय में ही मिलट्री में आत्मीयता बना ली। सब गुरु जी के प्यार में पागल हो गये थे। सन्तों की महिमा निराली ही होती है। वास्तव में सन्त लोग स्वभाव से अहिंसक वृत्ति के होते हैं और इस अहिंसक वृत्ति के प्रभाव से ही ये लोग दूसरों को भी अहिंसक या प्रेम से पूर्ण बना देते हैं और यही अहिंसक वृत्ति की पराकाष्ठा है। योगदर्शनका सूत्र भी है - “अहिंसा प्रति ठायां वैरत्यागः।”

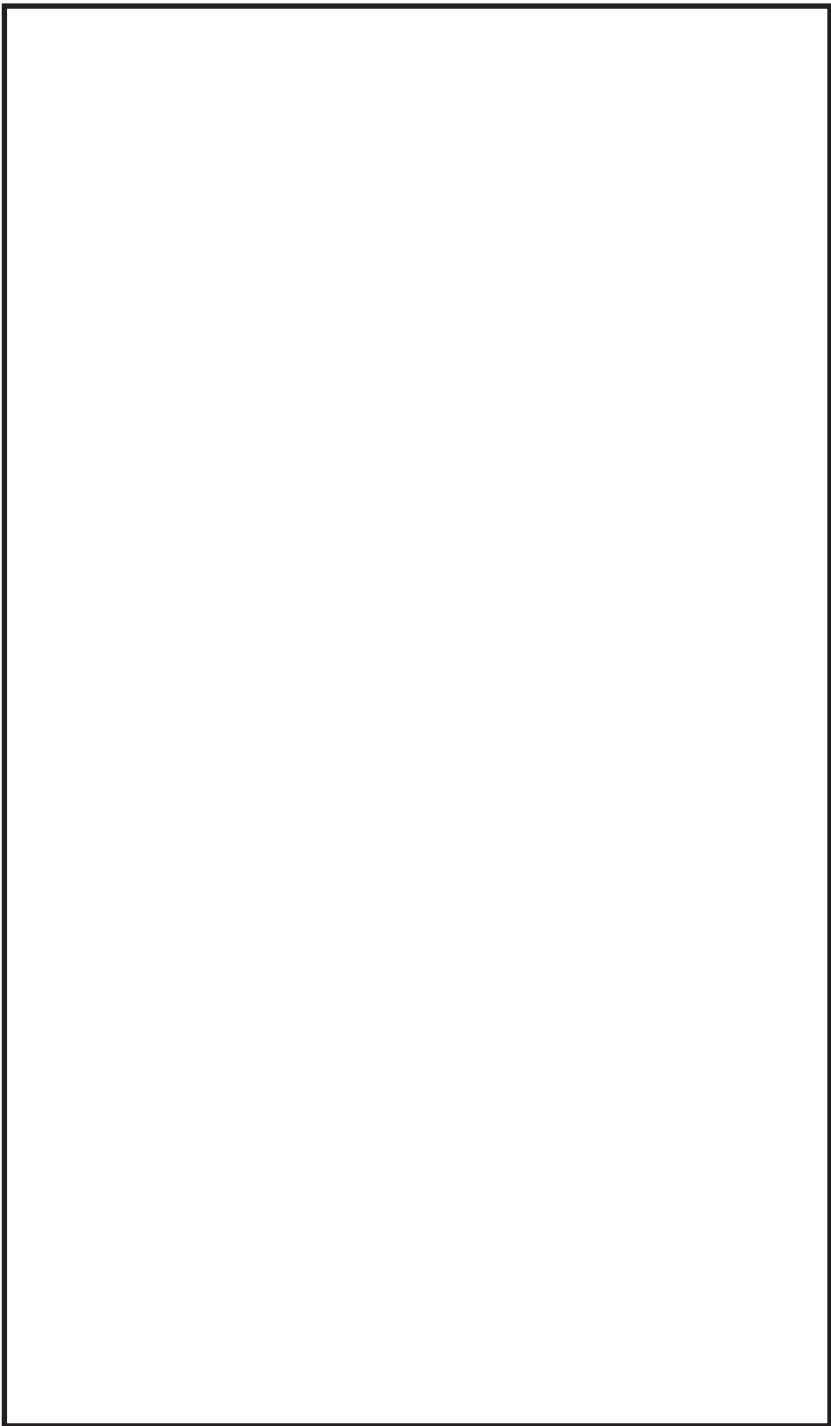
**(44) वैशाख पूर्णमासी को पूरा हो जाएगा-**

**(भक्त सतपाल काब्रछा) :-**

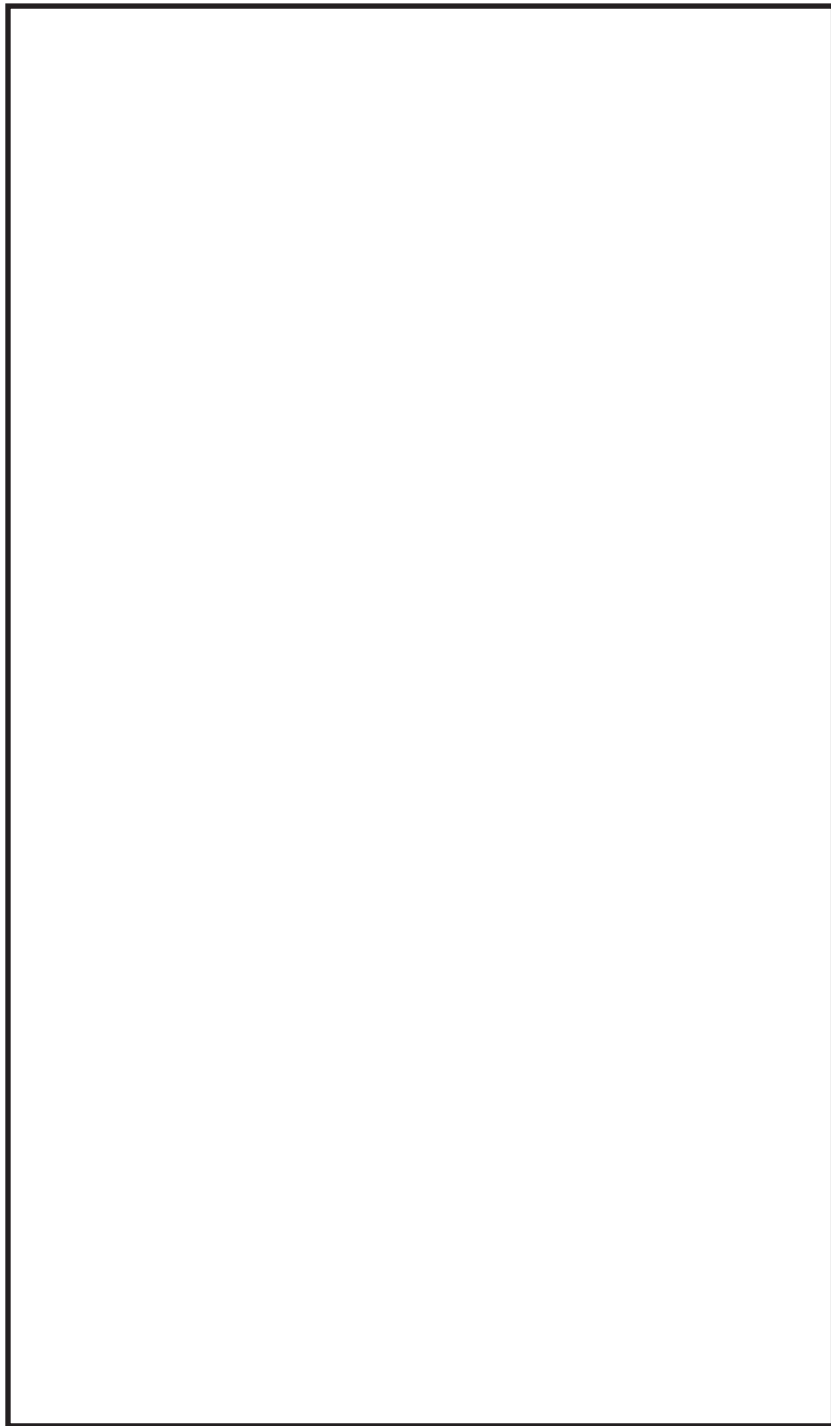
श्री सतपाल जी ने बताया कि मैं अपने गाँव काब्रछा में था और गुरु जी वहाँ पहुँच गए। गुरु जी ने कहा- बेटा मैं आज तेरे को कुछ देने आया हूँ क्योंकि तूने गुरु दरबार में बहुत सेवा की है। मैंने कहा गुरु जी मैं आपका दिया हुआ नहीं लिया करता मैं तो जो माँगूँगा वह मुझे दे देना वह मैं लूँगा।

गुरु जी कहने लगे जो तू वो माँगना चाहता है वह तो (गुरु जी का शरीर) वैशाख पूर्णमासी को पूरा हो जायेगा। जबकि वैशाख पूर्णमासी के छः महीने पड़े थे। गुरु जी ने यह भी समझाया कि यह शरीर नाशवान है जो जन्म लेता है वह एक दिन मरेगा ही इसमें आप कोई चिन्ता मत करना। यदि शरीर पूरा होने से पहले तूने यह बात किसी को बताई तो तेरा नाश हो जायेगा। शरीर पूरा होने के बाद बेशक बता देना। छः महीने पहले गुरु जी ने सतपाल काब्रछा को बता दिया था कि वैशाख पूर्णमासी को मेरा शरीर पूरा हो जायेगा।

ओ३म्त त्सत्



(67)



(68)

